पिघलता दर्द

शकुन्तला सोनी 'शकुन'
(राज्य स्तरीय पुरस्कार एव स्वर्णपदक प्राप्त)

पुस्तक सदन, उदयपुर— 313 001

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

पुस्तक सदन
231, बापू बाजार, उदयपुर-313 001
द्वा

प्रथम सस्करण 1998

आवरण राजेन्द्र सोनी

ए सी ब्रदर्स-उदयपुर
द्वारा कम्पोज

पुनीत ऑफसेट, उदयपुर
द्वारा मुद्रित

PIGHALTA DARD STORIES
By Shakuntala Soni

अपनी बात

मेरा कहानी संग्रह पिघलता दर्द समाज मे प्रचलित सम्बन्धो के आसपास घूमता एक ऐसा दायरा है, जिसमे कुछ दर्द है, अपनापन है, कुछ औपचारिकताएँ है, तो कुछ कटुताएँ भी है कहीं कहीं सम्बन्धो से उपजा दर्द का सैलाब है तो कहीं पर मन को शीतलता देती स्नेह और अपनत्व भरी स्नेहिल बौछारे भी है।

समाज का हर व्यक्ति अपने को कहीं न कहीं किसी न किसी पात्र के समकक्ष जरूर पाएगा क्योकि ये कहानिया मात्र कपोल कल्पित कल्पनाओ पर ही आधारित नहीं है बल्कि यथार्थ के धरातल से उठी सामाजिक रूढ़िवादिता परम्पराओ व सम्बन्धो से उपजी कटुताओ एव रिश्तो की उष्णता से पिघलते दर्द का सैलाब है। प्रत्येक कहानी किसी न किसी सत्य घटना का पुट लिये है।

कहीं पर आपको अतिशयोक्ति भी नजर आ सकती है किन्तु यह एक कड़वी सच्चाई है। कहने और सुनने मे ये घटनाएँ बहुत ही मामूली प्रतीत हो सकती है परन्तु इसकी तह तक जाएँ तो इनमे बहुत कुछ उमडता सा महसूस करेगे जैसे कोई दर्द का दरिया है जो बाहर निकलने को बेताब है।

शकुन्तला सोनी 'शकुन'

सादर समर्पित

स्व श्री राम राधा रघु को

प्रेरणा

श्री हरीश कुमार वर्मा- प्राचार्य

जिन्होंने पग पग पर सहयोग दिया।

आभार

- राजस्थान साहित्य अकादमी के प्रति कि मेरी भावनाओं को प्रकाशन का अवसर देकर पाठकों तक पहुँचाने में सहायक हुई।

- अकादमी अध्यक्ष आदरणीय श्रीमान् डा राधेश्याम शर्मा एव सचिव डा लक्ष्मी नारायण नन्दवाना के प्रति कृतज्ञता, जिन्होंने इस योग्य समझा

- श्री घनश्याम वर्मा-से नि प्रधानाध्यापक (प्रतापगढ़) श्री फतहलाल जैन प्राध्यापक-जिन्होंने भाषायी अशुद्धियों को शुद्ध करने में योगदान दिया।

- डॉ महेन्द्र भाणावत

- डॉ राजेन्द्र मोहन भटनागर

अनुक्रमणिका

और तूफान गुजर गया

दिन के दो बजे होंगे, शिखा काम निपटाकर आराम करने के विचार से लेटी ही थी कि बेल बज उठी, वह झुझलाई, कौन हो सकता है इस वक्त ? दरवाजा खोला सामने रीमा खड़ी थी, बदहवास सी "अरे ! रीमा तुम, आओ अन्दर आओ अरे ! अपना ये क्या हुलिया बना रखा है।" रीमा ने लम्बी सास ली और सोफे पर पसर गई।

" क्या बताऊ। शिखा ? ' " शिखा पहले यह बता आज तू थोड़ी फुर्सत में है, मेरे साथ चल सकती है ? " अरे पहले बात तो बता, ऐसा क्या काम आ गया ? " रीमा बिना किसी भूमिका के बोल पड़ी । " शिखा मै मै अपने गर्भस्थ शिशु की जॉंच करवाना चाहती हूँ।' "मेरे सास श्वसुर तीन महीने से यात्रा पर गये हुए है कुछ दिनों मे आने वाले है और मै उनके आने से पहले यह काम कर लेना चाहती हूँ। शिखा आश्चर्य चकित रह गई। ' पर रीमा तुम्हारी तो पहली सन्तान है फिर लड़का हो या लड़की क्या फर्क पड़ेगा?" " शिखा " चीख पड़ी थी वह।" नहीं शिखा नहीं "तू नहीं जानती बहुत फर्क पड़ेगा मेरा जीवन बेकार हो जायेगा ' शिखा मै सहन नहीं कर पाऊँगी मुझे लड़की नहीं चाहिये।"

शिखा अवाक् रह गई वह रीमा को समझाते हुए बोली "देख रीमा तू जल्दबाजी में कोई निर्णय मत ले, आखिर तू लड़की से इतनी नफरत क्यों करती है ? शिखा कुछ और कहती लेकिन रीमा की आखे तो गगा-जमुना बरसाने लगी थी। शिखा चुप हो गई उसे लगा उसने रीमा के दु ख को बढ़ा दिया है वह बोली' आई एम सॉरी, वेरी सॉरी रीमा । ' मुझे मालूम नहीं कि तुम्हे क्या दु ख है ? मैने तुम्हे दु ख पहुँचाया है। ' 'नहीं शिखा ऐसी बात नहीं है परन्तु मै तुम्हे कैसे समझाऊँ ? और वह अपने दु खो की परत दर परत खोलती चली गई।

''शिखा, मै बहुत छोटी थी, तब मुझे गुड़िया से बहुत लगाव था, लेकिन समय के थपेड़ों ने मेरा मन कलुषित कर दिया, मेरे मन में गुड़िया के प्रति नफरत पैदा कर दी। मम्मी कहती, मैं दिन रात गुड़िया को लिये घूमती, उसे नहलाती, खिलाती बातें करती और सोती भी साथ लेकर। मम्मी बतलाती मै बहुत जिद करके अपनी गुड़िया के लिये ढेर से कपड़े बनवाती, मुझे नये-नये कपड़े पहनाना अच्छा लगता, मम्मी भी मेरा मन रखने के लिये कपड़ों की कतरनों से छोटी-छोटी फ्राकें बना देती थी''।

'' चिकी का जन्म हुआ तो जैसे मुझे जीती जागती गुड़िया मिल गई थी। मै दिन रात उसी के आस पास मण्डराती, अब मेरा गुड़िया से खेलना छूट गया, मम्मी ने सभी गुड़ियों को एक छोटे से शो केस में सजा कर रख दिया था। बाद में स्वीटी और तृप्ति भी आ गई अब हम चार बहनें थी।'' ''मुझे याद है जब तृप्ति माँ के गर्भ में थी कि एक दिन दादी ने मेरी गुड़िया की अल्मारी खोलकर, सभी गुड़ियों को जलते चूल्हे में डाल दिया था। मै समझ नहीं पाई, दादी ने ऐसा क्यू किया ? मै न बोल पाई और न ही रोई, एक जोर की चीख मेरे मुह से निकली थी मम्मी ने मुझे कसकर गले लगा लिया था। तभी दादी चिल्लाई थी।' बड़ी आई बेटियों को प्यार करने वाली क्या छोरियों से पेट नहीं भरा? दिन रात इन गुड़ियों को नजरों के सामने रखोगी तो छोरिया ही तो होगी निपूती एक पोता भी नहीं दे सकी मेरे बेटे का तो सर्वनाश हो गया ? इस तरह लड़कियों का गुस्सा उन निर्जीव खिलौनो पर उतारा माँ तो बस रोती रहती दादी दिन रात इसी तरह ताने मारती रहतीं।

'तृप्ति का जन्म हुआ घर मे कोहराम मच गया अब तो दादी की जुबान चुप ही न होती थी इधर माँ की हालत खराब थी, रो रो कर उसने अपना बुरा हाल बना लिया था। हर डेढ़ वर्ष में बच्चा ऊपर से दादी के ताने माँ एकदम कमजोर हो गई थी। क्या तुम्हारे पिताजी माँ का ध्यान नहीं रखते टोका था शिखा ने ' नहीं ऐसी बात नहीं थी वह तो माँ का बहुत ध्यान रखते लेकिन दादी के सामने न जाने क्यू बोल नहीं पाते। वे माँ को कभी फल लाकर खिलाते तो दादी उन्हे जोरू

का गुलाम कहने से नहीं चूकती, पिताजी नहीं चाहते कि और बच्चे हो तीन लड़कियो के बाद माँ का आपरेशन कराना चाहा, मगर दादी ने वो आसमान सर पर उठाया कि पिताजी की बोलती बन्द हो गई।''

''शिखा मैने माँ को कभी हसते नहीं देखा'' कहते कहते रो पड़ी थी रीमा, उस समय माँ के रोने का कारण नहीं जान पायी, पर आज जब माँ का रोता हुआ चेहरा याद आता है, तो तड़प उठती हूँ, पागल हो जाती हूँ। कुछ बड़ी होते होते तो जान गई थी कि माँ हमारे ही कारण रोती थी ''रीमा सुबकने लगी। पानी का गिलास थमाती शिखा बोली - ''मत रो रीमा, ले पानी पी'' उसने रीमा के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा। ''तू बेकार ही चिन्ता कर रही है ये जरुरी तो नहीं कि तेरी माँ को लड़किया हुई तो तुझे भी होगी ही।'' ''नहीं शिखा तू नहीं समझेगी तू भी मेरी पीड़ा नहीं समझेगी तेरे तो लड़के है न दो''। ''पर रीमा अभी तो तेरा पहला बच्चा है और। ''नहीं'' चीखी थी वह, ''नहीं मै पहली बार ही लड़के को जन्म देना चाहती हूँ ताकि मेरी दादी और सास जैसी औरतों के मुह बद हो सके, मेरी माँ के माथे का कलक धुल सके। ' कहते कहते बिलख उठी थी वह। इस बार शिखा ने नहीं रोका, सोचा रो लेने दू, जी हल्का हो जाएगा। रोते-रोते ही रीमा बोली'' दादी के रोज के ताने ओर उलाहनों ने माँ को तोड़कर रख दिया था वह भी बात-बात पर बिगड़ने लगती, चिड़चिड़ी भी हो गई थी सब गुस्सा हम पर उतारती। अब तो वह भी दादी की जुबान बोलने लगी थी, कहती करमजलिया पीहर का सुख भी नहीं लिखा लाई, सभी को मेरे ही यहा आना था कोई मरती भी तो नहीं, इस तरह बोलकर थोड़ी देर बाद ही पश्चाताप की ग्लानि से भर जाती और हमें खूब प्यार करती, अपने मन में छिपे वात्सल्य को छिपा नहीं पाती। ' अब मै माँ की पीड़ा को समझने लायक हो गई थी तब उस पर गुस्सा नहीं तरस आता था।

शिखा घर में ही क्या ? हमारा तो बाहर निकलना भी दूभर हो गया था। इन औरतों को दूसरों की दुखती रग छूने मे न जाने क्या आनन्द आता ? कोई पूछती कितनी बहने हो तो कोई कहती तुम तो चार बहने हो ना, कोई सहानुभूति दिखाती कहती राम राम एक भाई तो

दिया होता भाई बिना तो पीहर का सुख ना ही, वे जानती है, भाई नहीं है तो क्यों पूछती ? जैसे भाई बिना हमारा तो कोई अस्तित्व ही नहीं। जीवन तो जैसे ठहर सा गया, कोई उत्साह, कोई खुशी नहीं। हम भाई नहीं चाहते, ऐसा तो नहीं था, परन्तु सभी ऐसा जताते जैसे सबकी चिन्ता का ठेका उन्होने ही ले रखा है। पिताजी और दादाजी थे जिनके कारण हमे भरपूर प्यार मिलता था। उन्होने कभी हमें लड़की होने का अहसास नहीं कराया था। अच्छा खिलाया पहनाया पढ़ाया और लायक बनाया। जीवन में कहीं कुछ था तो दादाजी और पिताजी वरना जीने का कोई सार ही नजर न आता। रक्षा बन्धन हो या भाई दूज दादी के आक्रोश का सामना करना पड़ता, घर में ऐसी मायूसी छा जाती कि बस। दादी को तो इस बात का गर्व था कि उन्होने पाच बेटों को जन्म दिया यह बात अलग थी कि जीवित केवल पिताजी ही बचे थे। जैसे तैसे समय गुजरा और मेरा विवाह हुआ सोचा अब इस तनाव से मुक्ति मिलेगी। परेश जैसा पति पाकर तो मै धन्य हो गई उनका प्यार पाकर मेरा तो जीवन ही बदल गया लगा जीवन में बहुत कुछ है। अब चारो तरफ खुशिया ही खुशिया दिखती मै सन्तुष्ट थी बचपन की कटु स्मृतिया धीरे-धीरे धुधलाती गयी। पर वाह रे नारी भाग्य।

शिखा चौकी अब उसकी भी जिज्ञासा बढ़ी वह रीमा के दु ख का कारण जानने को उतावली थी। ' फिर क्या हुआ'' रीमा के गालो पर ऑसू सूख चुके थे। '' शिखा मेरा दुर्भाग्य तो आगे खड़ा था। कुछ ही समय बाद सास ने तानाकशी शुरू कर दी मै और परेश दो वर्ष तक बच्चा नहीं चाहते लेकिन एक वर्ष बीतते ही सास के धैर्य ने जवाब दे दिया अब तो लाछन की बौछारे शुरू हो गई वे कहती न जाने किससे पाला पड़ा है ? इसके साथ की आई पड़ोस की बहुओ के बच्चे हो गये मेरे ही भाग्य फूटे एक पोते का मुह देखने को तरस गई। मुझे तो लगता है कहीं ? यहा तक कि दबी छिपी जुबान से बेटे के दूसरे विवाह की कल्पनाएँ करने लगी लेकिन परेश के सामने कहने से डरती। मै सकोच के मारे कुछ कह न पाती। '' यहा भी पोते की चाह सुनकर पुराने घाव फिर हरे होने लगे मन में भय व्याप्त हो गया कहीं लड़की हो जाएगी तो ?

एक दिन मेरी सास रमा चाची जो हमारी पड़ोसन है। उससे बात कर रही थी कि मेरी बहू के बच्चे नहीं हो रहे, कहीं यह बाझ न हो। उन्हें यह भी शक था कि मेरे बच्चे होंगे तो लड़किया ही होंगी, क्योंकि मेरी माँ के लड़किया ही हुई, और कह रही थी मेरे लड़का नहीं होगा तो उनके बेटे के वश का नाश हो जायेगा, रमा चाची ने उन्हें बहुत समझाया कि ऐसा नहीं होगा, आज की लड़किया भी लड़के से कम नहीं है, कई उदाहरण देकर भी समझाया। पर उनकी समझ में आये तब ना।

" शिखा मैने सोचा रमा चाची की बातों से जरूर सास का मन परिवर्तन होगा परन्तु वह तो बोली ना रमा छोरा बिना मुक्ति नहीं है, वश रो नाम तो बेटा से है। " इन बातों से तो मेरा मन घबराने लगा है फिर मायके वाली बातें सामने आने लगी। अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देता है, क्या होगा '? "सास को खुश रखने और तानों से बचने का एक ही उपाय था, बच्चा होने दू। मै आज गर्भवती हू, परन्तु ये बातें चैन नहीं लेने देती, मै जाँच करवा कर निश्चिन्त हो जाना चाहती हूँ, फिर सास को यह खबर सुनाऊँगी।

" शिखा तू ही बता क्या हम लड़किया इतनी खराब होती है? सभी हमसे नफरत क्यू करते है? हम किस बात से कम है? फिर लड़का न होने का दोषी हमें ही क्यों माना जाता है?" ' आश्चर्य तो यह है दोष देने वाली भी तो नारियाँ ही होती है। नारी ही नारी की दुश्मन क्यो बन जाती है? " हाँ शिखा इस क्यों का जवाब किसी के पास नहीं है। अब रीमा शान्त लग रही थी। अब शिखा के बोलने की बारी थी। मौका देख गर्म लोहे पर चोट करने की गरज से बोली, "रीमा तुम भाषण बड़ा अच्छा दे लेती हो। क्या ? रीमा अवाक् थी बिफर उठी, वाह शिखा तुम भी, तुम भी मेरा मजाक उड़ाना चाहती हो, मेरी व्यथा को भाषण कहती हो, शिखा तुम भी उन जैसी ही निकली।

"नहीं रीमा मेरा मतलब यह नहीं था मै तो कह रही थी कथनी और करनी में बड़ा अन्तर होता है तुम जो कह रही हो क्या उस पर अमल कर रही हो ?" 'मै कुछ समझी नहीं शिखा" "तुम कह रही थी ना नारी की दुश्मन नारी है क्या तुम भी दुश्मन नहीं बन रही?

अपने गर्भस्थ शिशु जो दुर्भाग्य से लड़की हुई तो तुम एवॉर्शन करवा लोगी, है न, तुम तो एक नारी को पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले यमलोक पहुँचाने की तैयारी कर रही हो। रीमा, कहते है, मनुष्य जन्म बड़ी मुश्किल से मिलता है, फिर हम कौन होते है ? क्या अधिकार है कि हम उसे दुनिया में आने से पूर्व ही नष्ट कर दें ? मुझे तो तुम अपनी सास और दादी से भी अधिक क्रूर लग रही हो, उन्होंने तो केवल शब्द बाण ही चलाये थे, पर तुम तो हत्या जैसा जघन्य अपराध करने से भी नहीं डर रही हो। लगता है कि जब भी लड़की भ्रूण तुम्हारे गर्भ में आयेगा तुम जाँच करवाती रहोगी और काम भी तमाम।'' रीमा सकते में आ गई उससे कुछ भी बोलते नहीं बना, नजरें नीची हो गई शिखा से नजरें मिलाने से भी कतराने लगी, मन ग्लानि से भर गया ऐसा तो मैने सोचा ही नहीं ।

'' हे भगवान ! मैं कितना बड़ा पाप करने जा रही थी अच्छा हुआ जो तेरे यहा आ गई, वरना क्या होता ? शिखा ने छेड़ा- '' रीमा तैयार हो जाऊ चल किसी क्लीनिक पर तेरा । शिखा प्लीज मुझे माफ कर देख अब अधिक शर्मिन्दा मत कर आज तूने मुझे बचा लिया। बस-बस रहने दे । खैर तेरा भी दोष नहीं तूने जैसा देखा वैसी ही बन गई पर तू भूल गई कि तू पढ़ी लिखी है, दादी और सास उस जमाने की है जब बेटी जन्म अभिशाप था और बेटे का जन्म जीवन की सार्थकता पर हम भी उसी लीक पर चलती रही तो उनमें और हमारे में अन्तर ही क्या रह जायेगा ? यदि सभी तुम्हारी तरह हो जायेगी तो जानती हो रीमा क्या होगा ? क्या होगा'' ' होगा क्या इतिहास में लिखा जायेगा ' नारी ही नारी जाति की समाप्ति का कारण है '' शिखा के बोलने के अन्दाज से रीमा को हसी आ गयी। वह बोली देखना शिखा मैं लड़की जन्म पर ऐसी खुशिया मनाऊँगी कि सब देखते रह जायेगे '। 'महारानी जी पहले लड़की होने तो दे । रीमा शरमा गयी घड़ी देखकर रीमा चौकी अरे शाम हो गई अब चलूँगी । शिखा रीमा को जाते हुए देखती रही उसे लगा जैसे बहुत बड़ा तूफान गुजर गया हो।

पराधीनता की कसक

सुजाता आज यहुत खुश थी, यरसों याद अपने मन की यात सुनने याला कोई मिला। दीपा को उसके ऑफिस में आये आज दस दिन हो गये थे, इतने कम समय में ही दोनों की दोस्ती इतनी गहरी हो गई कि लगता जैसे यरसों से साथ रह रही हो। सुजाता को याद आया वो दिन जय दीपा ऑफिस पहली यार आई थी, सवसे पहले उसने दीपा को ऊपर से नीचे तक भरपूर निगाह से देखा, उसकी आदत सी वन गई थी, किसी भी हमउम्र को देखने से पूर्व उसके सुहाग चिन्हों पर नजर डालती, दीपा को उसने जव सुहाग चिन्हों से खाली पाया तो उसे सुकून मिला, माथे की विन्दी से यह तो अनुमान लग गया कि वह विधवा तो नहीं है या तो परित्यक्ता या कुवारी होगी, सुजाता का अनुमान सही था दीपा कुवारी ही थी। हमउम्र और दोनो की स्थिति भी लगभग एक जैसी थी अत दोस्ती जल्दी ही हो गई। कुवारी रहकर पैतीस वर्ष की उम इस समाज में पूरी करने का कड़वा अनुभव दोनों ने महसूस किया था।

आज लन्च टाइम में एकान्त में वैठी दोनों ही अपने मन की परते खोल रही थी, सुजाता वोली ' दीपा तूने विवाह क्यों नहीं किया। दीपा एक पल को घवरा सी गई, परन्तु शीघ्र ही अपने आप को सभाला, आज तक वो इस विषय में किसी से यात नहीं कर पाई थी करती क्या किसी को उसकी टीस का अनुभव भी तो नहीं था, वह तो केवल वेचारी यनी हुई थी, आज उसे मौका मिला था सुजाता क्या वताऊ? मेरा ऐसा भाग्य कहाँ ? या यू कह मैने अपने ही हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है'। 'पर तू तो इतनी सुन्दर है तेरे लिये लड़कों की कमी तो नहीं रही होगी दीपा हसी, 'हाँ सुजाता कमी तो विल्कुल नहीं थी, मेरी ही मति मारी गई थी एक से यढ़कर एक रिश्ते आये किन्तु रूप के घमण्ड में चूर मुझे कोई पसन्द ही नहीं आता था। सभी में कुछ न कुछ कमिया निकाल कर मना कर देती।' मेरी इस आदत से मम्मी पापा परेशान हो गये उन्होंने भी इस सम्वन्ध में यात करना बन्द कर दिया धीरे-धीरे रिश्ते आने ही यन्द हो गये। थोड़े दिन

याद पिताजी की मौत   सब कुछ इतना जल्दी हुआ कि कुछ सोचने का भी समय नहीं मिला, अब सोचती हू तो खुद के बाल नोचने का मन होता है   अपनी मूर्खता पर पछताती हूँ। अरे ! मै तो अपनी ही रामायण लेकर बैठ गई तेरी भी तो सुना।

सुजाता ने लम्बी श्वास ली 'क्या बताऊ ? मेरी भी राम कहानी कुछ तेरी जैसी ही है'। दीपा उसकी और देखने लगी। सुजाता की आँख गीली थी। वह दीपा की तरफ देखे बिना ही बोलने लगी। 'तीन बहनों की नर्क जैसी जिन्दगी देख ब्याह के नाम से ही घृणा हो गई, एक बहन का पति शराबी, शराब पीकर मारपीट करना जैसे जन्मसिद्ध अधिकार हो बेचारी कब तक सहती आखिर में आत्महत्या कर ली। दूसरी बहन का पति दहेज का लोभी आये दिन एक नई माग के साथ बहन को घर भेज देता आखिर पिताजी क्या करते चार बेटिया और एक बेटा था उसकी जिन्दगी भी नर्क जैसी थी। पिताजी ने आगे पढ़ाकर पैरों पर खड़ी करने की कोशिश की किन्तु उसके पति को यह भी गवारा नहीं था। तीसरी बहन के तीन बेटियाँ जन्मी, बेटा न होना ही उसके जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप बन गया, दिन रात सास के ताने और पति की उपेक्षा ने उसे तोड़ कर रख दिया, पिताजी इतना सब सहन न कर सके और चल बसे। पिताजी की मौत ने मुझे तोड़ दिया, ये सब देखने के बाद मुझमें विवाह करने का साहस न रहा और मै भीष्म प्रतिज्ञा कर बैठी। मूझे क्या पता था कि बिना पुरूष से रिश्ते की डोर में बन्धे बिना इस समाज में जीना कितना मुश्किल है। कहने को तो नारी आज कहा से कहा पहुच गई, परन्तु मुझे तो लगता है वो आज भी वहीं है जहाँ बरसों पहले थी, बिना आदमी के उसे जीने का कोई हक नहीं। विधवा, परित्यक्ता या कुवारी का जीना कितना दुभर है। 'क्यू दीपा, मै ठीक कह रहीं हू ना ? हाँ सुजाता मै भी सोचती हू आजकल सभी नारी स्वतन्त्रता की बात करते है मुझे तो कुछ समझ नहीं आता मै सोचती हू घर मे रहने वाली औरतो से अपने पैरो पर खड़ी रहने वाली नारी अधिक सुखी है परन्तु कमाने वाली लड़कियो को पग-पग पर कितना सहना पड़ता है? समाज की उठती उगलियो का सामना करती आखिर वो थक जाती है।

दोनो अपने दुख मे न जाने कब तक डूबी रहती, कि जोर से हसने की आवाज से चौक गई। सामने श्रीमती रमा अजली और आरती खड़ी थी। दोनो हड़बड़ा कर खड़ी हो गई, उन्हे लन्च टाइम खत्म होने का पता ही नहीं चला। आरती बोली' सुजाता दोनो मे क्या खिचड़ी पक रही है ? भई तुमने तो हमसे बोलना ही छोड़ दिया है' सुजाता बोली नहीं ऐसी तो कोई बात नहीं- उनके मुड़ते ही सुजाता ने मुह विचकाया 'क्या बोले? पति, बच्चे, साड़ी और गहनों के अलावा कोई बात ही नहीं करती । सुजाता का मन उखड़ सा गया। शाम को दीपा को घर आने को कह कर अपने काम मे लग गई।

दीपा ने जैसे ही घर में कदम रखा, तेज आवाज से उसके कदम रूक गये। कान में शब्द पड़ते ही समझते देर नहीं लगी कि सुजाता की भाभी है । 'महारानी जी के नखरे तो देखो मै कोई नौकरानी तो नहीं हू, नौकरी करती है तो मेरे पर अहसान नहीं करती। हे भगवान ! ये जीवन भर का बोझ मेरे माथे क्यू मढ़ दिया? दीपा को ऐसे में अन्दर जाना उचित नहीं लगा, जैसे ही जाने को मुड़ी कि सुजाता की नजर पड़ गई उसने आवाज लगाई अरे दीपा ये क्या? जा रही हो दीपा को रूकना पड़ा उतरा हुआ मुख मन की पीड़ा छिपा नहीं पा रहा था। सुजाता उसे बैठक में बिठा जोर से बोली माँ दीपा आई है। ताकि भाभी भी सुन ले उसका बोलना बन्द हो गया था। दीपा को अपना घर याद आ गया उसके घाव फिर से हरे हो गये, मन अतीत में विचरण करने लगा उस दिन कैसा तूफान आया था। माँ किस तरह पिताजी को कोस रही थी। पिताजी की लाचारी का खयाल आते ही मन कसैला हो उठा उस दिन माँ कह रही थी, कमाती है तो कौनसा मेरे ऊपर अहसान करती है ? कौन सा मुझे सौप रही है ? एक तुम हो जो उसका बैक बेलेन्स बनाने मे लगे हो बेटी के पैसे के हाथ नहीं लगाऊँगा कैसा सिर पर चढ़ा रखा है अब उससे पैसे नहीं लिये तो मुझसे बुरा न होगा। पिता का दर्दीला स्वर उभरा था। तू क्यो उस बेचारी के पीछे पड़ी है वह तो पहले से ही दु:खी है मेरी ही बुद्धि पर पत्थर पड़े थे जो मै उसकी जिद मे आ गया आज उसकी सगी माँ होती तो क्या ऐसा होने देती इस पर तो बिफर उठी थी वह पिताजी ने भी

न जाने किस आवेश में इतना सब माँ से कहने की हिम्मत की थी वरना वे तो उसके सामने जुबान भी नहीं खोलते थे, पिताजी ने कहा था तेरे भी तो दो-दो सपूत है, कभी एक धेला भी दिया, विवाह होते ही निकल गये अपनी जोरूओं को लेकर, एक यही तो है जो हमारा इतना खयाल करती है,इन बातों का ऐसा हंगामा खड़ा हुआ कि पिताजी बिस्तर में पड़े तो फिर नहीं उठे आखिर माँ के तानों, उलाहनों ने उसे घर छोड़ने पर विवश कर दिया था वह तो पिता की मौत का जिम्मेदार उसे ही ठहराती थी। दीपा अपने गमों की गहराईयों में डूबती ही जा रही थी।

सुजाता की माँ आ गई, दीपा अचकचा कर उठ गई गालों पर ढलक आये आसू पोंछ माजी के चरणों में झुक गई, सुजाता से बोली, 'तू कितनी भाग्यशाली है जो तेरी माँ है' हा दीपा एक ये ही तो है जिसके सहारे जी रही हू वरना । तभी सुजाता की भाभी आ गई, दीपा के नमस्ते का लापरवाही से जवाब देकर माजी से बोली मैं किटी पार्टी में जा रही हू, खाना आप बना लेना और हा आने में देर हो जाएगी, बर्तन साफ कर बच्चो को भी सुला देना और खट-खट करती चली गई। दीपा सबकुछ देखकर भी अनजान बनी रही जैसे कुछ देखा सुना न हो कहीं सुजाता का दु:ख और न बढ़ जाये किन्तु भाभी के जाते ही सुजाता बिलख उठी दीपा मै क्या करू? मै मर क्यू नहीं जाती देखा दिन रात कैसे ताने मारती रहती है माँ को तो बस नौकरानी बनाकर रख दिया है बेचारी इस उम्र में भी कितना काम करती है फिर भी उसकी जुबान चलती रहती है दीपा क्या इस घर मे मेरा कोई हक नहीं? पिताजी थे जब सब कुछ कितना अच्छा था, अब तो सब बदल गया। मेरी खतिर माँ को भी कितना सुनना और सहना पड़ता है? मै कितना काम करती हू, कहीं नाराज न हो जाए ? सुबह का खाना बनाकर दफ्तर आती हू, शाम को बच्चो को पढ़ाना होमवर्क करवाना कपड़ो के प्रेस करना और ये है कि किसी न किसी बहाने घर से बाहर चली जाती है। सैर सपाटे पिक्चर सहेलियाँ और किटी पार्टियाँ, भैया के सामने ऐसा जताती है जैसे हमारा बहुत खयाल रखती है। एक ही साथ इतना कह गई थी सुजाता। वह कुछ और बोलती कि दीपा बोली तू भैया से बात क्यू नहीं करती क्या बात करू एक दिन

माँ ने कुछ कहा था तो भैया ने आसमान सिर पर उठा दिया था कहने लगे, माँ वो भी तो इन्सान है, उसे भी आराम चाहिये, बेचारी दिन भर खटती है, सुजाता नौकरी पर जाती है, तुमसे ज्यादा काम नहीं होता। उस दिन के बाद मेरी तो बात करने की हिम्मत भी नहीं हुई देख ना, भैया को कैसी पट्टी पढ़ा रखी है ?

तभी माँ चाय लेकर आ गई, सुजाता की आँखों में आसू देख उसका कलेजा मुह को आ गया, दीपा अब तू ही इसे समझा, मै तो हार गई बात बात पर रोती है कहीं जाती नहीं किसी से बात नहीं करती नौकरी नहीं करती तो शायद घर से बाहर भी नहीं निकलती दीपा सोचने लगी बेचारी माजी क्या जाने ? बाहर कितना कुछ झेलना पड़ता है ? समाज में गये नहीं कि लोगों की सवालिया निगाहें पीछा नहीं छोड़ती सहेलिया जो अब सहेलिया नहीं रही उन्हें भी अपनी कुँवारी सहेली से खतरा लगता है। ऑफिस मे किसी से बात कर लो, शक की निगाहों से देखते हैं, न जाने लोगों को स्त्री पुरुष के रिश्ते के और कुछ दिखाई ही नहीं देता। वह और कुछ सोचती कि माजी ने खाने के लिये आवाज लगा दी। उस दिन के बाद दोनों एक दूसरे की हमराज बन गई, अब वे पहले से खुश रहने लगी थी। दीपा को यह भी पता लग गया था कि सुजाता ने आत्महत्या जैसा कदम भी उठाया था, भाग्य से वह बच गई थी।

एक दिन सुजाता को दु:खी देख दीपा ने कह दिया ' 'सुजाता रोज-रोज की परेशानी से तो अच्छा है, तू माँ को लेकर अलग रह।' 'क्या ? सुजाता आश्चर्यचकित रह गई। 'तू क्या कह रही है दीपा ? लोग क्या कहेंगे ? भैया क्या समझेंगे ? और माँ वह तैयार हो जायेगी।' वाह सुजाता ! इतना सहने के बाद भी लोगो की परवाह कर रही है। कौन आया था तेरा दु:ख समेटने? किसको फुर्सत है तेरा दु:ख जानने की ? अब तू सोच ले माँ को मनाने का काम मुझ पर छोड़ दे। और हा मै भी तो तुम्हारे साथ रहूगी मुझे भी माँ मिल जायेगी और एक प्यारी सी बहन भी । अब निर्णय करना तेरे हाथ में है।

सुजाता की गुस्से में मुठ्ठियाँ कस गई चेहरे पर दृढ़ता के भाव थे और आखें अगारे बरसा रही थीं। ' हाँ दीपा तू ठीक कह रही है मेरी किसी को परवाह नहीं है तो मै किसी की परवाह क्यू करूँ ? उसके चेहरे पर दृढ़ता के भाव देख दीपा की आखों में खुशी के आँसू आ गये।

सुलगते अरमां

रूपल की खुशी देखकर समता के दिल में भी जैसे कुछ घटक गया, काश मै ऐसी गलती नहीं करती, जाते जाते रूपल कहने लगी, तुम नहीं आओगी तो मै सगाई नहीं करूगी, धत् पगली ऐसा भी कहीं होता है? फिर दूल्हे को सामने देख मूझे कहा याद रखेगी? ऐसा हो सकता है कि मै अपनी प्यारी सहेली की सगाई में न जाऊ। दोनो हस पड़ी थीं।

कुछ ही महीने हुए समता का परिवार यहा रहने आया, गाव में लाखों की जमीन जायदाद थी किन्तु, नये जमाने की हवा ने शहर में रहने की ललक बढ़ा दी थी, रईस घराने की आई बड़ी बहू ने इस काम को अन्जाम दिया और यहा ऐसी आलीशान कोठी बन गई थी, अम्मी की इच्छा कम थी किन्तु बड़ी भाभी के आगे उन्हें झुकना पड़ा।

घर पास होने से रूपल समता की खास सहेली बन गई थी उसकी हमराज, उसके सुख दु ख की साथी। आज वही रूपल समता से दूर जा रही थी। समता किसी के घर नहीं जाती थी एकमात्र रूपल से ही उसकी गहरी दोस्ती थी। वैसे भी समता ने अपने आपको घर में ही कैद करके रख दिया था उसको किसी चीज से कोई लगाव नहीं रहा, दिन रात चहकने वाली खाने पीने की शौकीन घूमने फिरने व सैर सपाटे से तो उसे फुर्सत ही नहीं मिलती थी ऐसी समता एकदम बदल गयी। गम्भीर सूनी आखे पीला चेहरा देखकर लगता नहीं कि ये वो ही समता है अभी उसकी उम्र ही क्या थी, बीस बरस इस उम्र की लड़किया तो अभी कुवारी घूम रही थी और उसने इतनी सी उम्र में कई रग देख लिये थे।

समता को अपना अतीत याद आ गया। वह पछताने लगी क्यू अपनी मॉ की बातों मे आ गई, उसने अपने ही हाथों अपने सुख ससार मे आग लगा दी थी सोचने लगी क्या वह काम करते मर जाती? हर औरत घर का काम करती है, यहा भी तो करती हू मै घर का काम वैसे

भी घर गृहस्थी सम्भालना तो हर औरत का फर्ज होता है, क्यू नहीं समझ पायी थी उस समय ये बातें, अविनाश भी कितना चाहता था उसे लेकिन मै ही बेवकूफ थी जो दिन-रात उसे भड़काने का प्रयास करती, अपनी अम्मी के सिखाने में आकर यही सब करती गई जो वह चाहती घर का काम नहीं करना, सास को उल्टा सीधा सुनाना, अविनाश की उपेक्षा हे भगवान क्यू मेरी बुद्धि पर पत्थर पड़ गये थे ? कहा काम आया मेरा दर्प, रूप और पैसों का घमण्ड, माँ का अतिरिक्त लगाव। क्यू नहीं उन लोगों की कद्र कर पाई।

उसे अविनाश के कहे अन्तिम शब्द याद आने लगे समता मत जाओ अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है तुम्हें यहा कोई तकलीफ नहीं होगी देखना अम्मी बाबूजी तुम्हें बहुत प्यार देंगे कहा समझ पाई थी वह प्यार की परिभाषा और फिर माँ के शब्दों में उसे ज्यादा वजन लगा था मेरी बेटी कोई नौकरानी नहीं है जो दिन रात काम में खटती रहे, गरज उसे ही पड़ेगी तब ले जायेगा नाक रगड़ता। लेकिन अविनाश भी था बड़ा स्वाभिमानी, फिर लौटकर नहीं आया। अम्मी ने तो उसे यहीं आकर रहने को भी कहा किन्तु वह भी कहा खरीद पायी थी उसके स्वाभिमान को, पैसों के बल पर। सोचते-सोचते आँखों में आँसू आ गये।

बाथरूम में मुँह धोकर जैसे ही सोने को कमरे में जाने लगी कि बैठक में खुसर-पुसर की आवाज ने उसके बढ़ते कदमो को रोक दिया पर्दे की ओट से देखा तो अम्मी भाभी और छोटे भैया किसी मत्रणा मे व्यस्त थे समता जाने लगी किन्तु उसे लगा किसी विशेष षड़यन्त्र को रूप दिया जा रहा है सोचा चोरी छिपे किसी की बातें सुनना गलत है फिर भी खड़ी रह गई। भैया कह रहे थे भाभी परसो कोर्ट में मुकदमे की तारीख है मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा तभी अम्मी का स्वर उभरा करना क्या है ये बोले और जैसा कहे करता जा घबराने की क्या बात है? भगवान ने चाहा तो बहुत जल्दी उस बला से छुटकारा मिल जायेगा। भाभी भी थोड़ा जोश में बोली अरे देवरजी क्यों घबराते हो? मै किस दिन काम आऊगी? एक बार तलाक

हो जाने दो फिर देखना आरती को दुल्हन बनाकर ले आऊगी। समता सुनकर सन्न रह गई, तो छोटी भाभी से छुटकारा पाने को ये खेल खेला जा रहा है।

भैया भी भाभी की गिरफ्त में आ चुके थे, पर भाभी वकील कह रहा था कि हमारा केस कमजोर है बच्ची का भरण पोषण भी देना ही होगा तभी भाभी के जेहन में कोई कुटिल बात आई, वो मुस्कुराई अरे तुम भी बड़े डरपोक निकले देवरजी, देखना अब न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी वो कैसे भाभी बस तुम अदालत में उस पर बदचलनी का आरोप लगा देना, और कह देना बच्ची मेरी नहीं है अनूप चौका पर भाभी मै ऐसा तो नहीं तुम्हें कहना होगा, क्या तुम नहीं चाहते उस जाहिल गवार से छुटकारा मिले ?

आगे नहीं सुना गया समता सोच भी नहीं सकती थी कि उसके घर में लोग ऐसी नीच हरकत करेगे इसी पैसे के गर्व ने मेरी जिन्दगी उजाड़ दी और अब बेचारी छोटी भाभी छी घृणा हो आई उसे अपनी अम्मी, भाभी और छोटे भाई से समता पूरी रात सो नहीं पाई। वह सोचने लगी बड़ी भाभी के बारे में कैसी औरत है क्या मिलता है इसे किसी का जीवन बर्बाद करने में? बेचारे बड़े भाई साहब क्या जाने? इतना दूर विदेश में बैठे है, और अम्मी पर भी भाभी द्वारा लाये भारी दहेज और विदेशी वस्तुओं की भरमार ने लालच का पर्दा डाल दिया है अम्मी भी भाभी के कहे बिना कुछ नहीं करती इस घर में उनकी आज्ञा बिना पत्ता तक नहीं हिलता। बेचारी छोटी भाभी भी आखिर इनका शिकार हो गई।

आज समता को समझ मे आया कि छोटी भाभी को इतने लम्बे समय से यहा क्यों नहीं लाया गया, उसे छोटी भाभी से बहुत हमदर्दी थी, घर में तो केवल छोटी भाभी से ही बात करना अच्छा लगता था पर वो भी बड़ी भाभी को नहीं सुहाता बेचारी पर कितना जुल्म हुआ पर वह कुछ बोल नही पाती करती भी क्या? मन मसोस कर रह जाती, एक दिन की बात है भैया कितनी बेरहमी से बेचारी को पीट रहे थे और बड़ी भाभी चुपचाप देख रही थी मैने कहा भाभी आप रोको न तब कैसी

विफरी थी मुझ पर कहने लगी समता तू अपना काम कर हमारे घर के मामले मे तुझे दखलअन्दाजी करने की कोई जरूरत नहीं है कैसा अपना सा मुँह लेकर बैठना पड़ा उस दिन पहली बार लगा था ये घर मेरा नहीं है, मै कितनी पराई हूँ तभी से मेरा भ्रम टूट गया था कि विवाहित लड़की की कद्र ससुराल मे रहने से ही है पर अब कर भी क्या सकती हूँ ?

कई बार मन करता भाग कर अविनाश के घर चली जाऊ, अपने किये की क्षमा मागू पर एक वर्ष का अन्तराल कोई कम नहीं होता मन में अनेक शकाएँ जन्म लेती क्या पता अविनाश ने दूसरा विवाह ही कर लिया हो इस कल्पना मात्र से ही सिहर उठती उसे अपनी बेबसी पर रोना आ जाता कभी-कभी अपने भाग्य व अपनी गलती पर पछताती व आँसू बहाती रहती।

उस दिन भी पूरी रात कभी अपनी तो कभी छोटी भाभी की तकदीर पर आँसू बहाती रही और रोत-रोते ही न जाने कब सो गई?

सुबह उठी तो सिर भारी था रात का घटना चक्र पुन उसके सामने घूम गया मन हल्का करने बाथरूम में नहाने लगी ठण्डा पानी सिर में पड़ते ही जैसे सुकून मिला, अचानक कुछ याद आया तो चौकी अरे! आज तो रूपल की सगाई है इस बात से ही उसे थोड़ी खुशी का अहसास हुआ कि रूपल के कहे शब्द याद आ गये तो अकेले में ही हस पड़ी वह। आज समता ने कई महीनो बाद अपने आपको सजाया था आईने में अपने ही अक्स से शरमा गई थी ऐसा लग रहा था जैसे बेजान मूर्ति मे प्राण फूक दिये हो। तभी अविनाश की याद आ गई, कैसा निहारता था वह उसकी निगाहों मे कैसे प्रशसा के भाव होते थे, न जाने क्यू अविनाश की याद आते ही कलेजे में हूक सी उठी। समता ने एकदम सिर झटका क्यों मै हर वक्त अतीत में ही खोई रहती हूँ, कम से कम आज तो वर्तमान में ही जीना चाहती थी अत अपना पूरा ध्यान अपने को सवारने मे लगा दिया।

बेटी को अरसे बाद सजते देख माँ का दिल भर आया चलो कुछ

देर तो इसे खुशी मिलेगी अब उसे भी बेटी के गम का अहसास था, वह स्वय को गुनहगार मानने लगी थी। आँखों में ढलक आये ऑसू पोंछती वह रसोई मे चली गई औरत कितनी ही कठोर क्यू न हो पर माँ का दिल भी कैसा होता है ? आज जान पाई थी वह।

बड़ी भाभी कनखियो से समता की ओर निहार कर मुँह बिचका रही थी, उसे अपनी ननद का सवरना नहीं भा रहा था। तभी महिमा आ गई समता ऐ समता चल ना । महिमा की निगाहे जैसे ही समता पर पड़ी दग रह गई वह, मुँह से चीख निकल गई वाह क्या बात है? आज किस पर बिजली गिराने का इरादा है भई आज तो सभी दुल्हन को भूल तुम्हे ही न देखने लगे धत् शरमा गई थी समता, अन्दर तक कुछ कचोट सा गया लेकिन समय की नजाकत देखते हुए वह महिमा के साथ चल दी। रूपल की सगाई की रस्म चल रही थी गीतो के मधुर स्वर, पकवानो की महक, सहेलियो की छेड़छाड़ ऐसा खुशनुमा माहौल भी समता को नहीं बाध पा रहा था। वह तो न जाने कहा खो गई थी?

उसे अपनी सगाई याद आ गई कितनी खुश थी उस दिन, सभी अविनाश की सुन्दरता की तारीफ कर रहे थ, वह भी तो रगीन सपनो में खोई थी पर भाग्य को शायद कुछ और ही मजूर था, तभी वो अपने हाथों अपने ही सुखी ससार को आग लगा आई थी। सगाई की रस्म पूरी हो गई और उसे पता भी न चला। वह तो अतीत में ही भटकती रहती यदि रूपल उसे खाने के लिये न बुलाती।

अनमनी सी समता जब घर पहुँची तो उसके सब्र का प्याला छलक गया था पलग पर गिर कर फूट-फूट कर रोने लगी मानो दिल मे छिपा लावा पिघल कर बाहर आ जाना चाहता हो तभी उसका छोटा भाई अजय वहाँ आ गया समता की हालत देख बिना कुछ कहे सुने उसके मन की पीड़ा जान गया था पहले कभी उसने समता को इस तरह रोते नहीं देखा था। उसे भी अपने अन्दर कुछ कचोटता सा लगा वह भी तो इसी गम में जी रहा था।

अजय को पहली बार अपनी पत्नी मीनू की याद आई उस पर किये जुल्म याद आये तो अपने आप पर क्रोध आने लगा, सोचने लगा आज से पहले मुझे ऐसा महसूस क्यू नहीं हुआ? वह तो मीनू के दु:ख से अनजान आरती के खयालों मे ही डूबा रहता सच में उसे कभी मीनू की याद नहीं आई पर आज शायद बहन को इस गम से दु:खी देखकर उसे मीनू का दु:ख याद आया। वह अपने आप से सवाल करने लगा

मै क्यू इतना स्वार्थी बन गया था आरती मे ऐसा क्या था जिसको पाने की ललक मे मै अपनी भोली भाली पत्नी पर जुल्म करता रहा, उसके प्यार की कद्र नहीं कर पाया? आज आरती का दूसरा ही रूप दिखाई देने लगा था छी मै भी कितना नीच हूँ एक परित्यक्ता बदचलन लड़की के खातिर अपनी पत्नी को भूल बैठा। क्यूँ मै भाभी की चालों में आया आज पता चला भाभी क्यू दिन रात मीनू के प्रति मेरे मन में जहर घोलती थी, ताकि अपनी चचेरी बदचलन बहन को इस घर में दुल्हन बनाकर ला सकें। मीनू पर मै इतना अत्याचार करता रहा ये मेरी इस बुद्धि मे क्यू नहीं आया? और वो बेचारी नन्ही फूल सी कली दिव्या उसका भी खयाल नहीं किया और ऊपर से ऐसा घृणित कार्य करने जा रहा हूँ तलाक । मैने ये भी नहीं सोचा मेरी बच्ची का क्या होगा? भगवान तूने मुझे बचा लिया वरना मै क्या कर जाता? हे ईश्वर तेरा लाख लाख शुक्र है, जो तूने मुझे समय रहते जगा दिया वरना मै जिन्दगी भर अपने को माफ नहीं कर पाता। अब क्या करूँ कैसे अपनी बहन और मीनू की खुशियाँ उन्हे लौटाऊ? अब भाभी की एक नहीं चलेगी। आज मेरी आँखों से पर्दा हट गया है अब मेरी मीनू को और सहन नहीं करना होगा और समता का कैसे क्या करूँ।

तभी रूपल वहाँ आ गई समता को रोता देख कुछ समझ नहीं पाई अभी थोड़ी देर पहले तो मेरे घर से लौटी है । अजय ने रूपल को बाहर बुला लिया रूपल मुझे तुम्हारी मदद की जरूरत है तुम साथ दोगी तो शायद मेरी बहन की खुशियाँ लौटा सकूँ। रूपल कुछ हैरान सी देखने लगी मै भैया मै क्या कर सकती हूँ । अजय ने उसे अपना प्लान समझाया तो वह खुशी से उछल पड़ी

और भैया मै अपनी सहेली के कुछ काम आ सकूँ इससे अच्छी बात मेरे लिये और क्या हो सकती है ?

अपनी योजना के मुताबिक सबसे पहले समता का मन लेना था कि वह क्या चाहती है ? गर्म लोहे पर चोट करने की गरज से रात को ही रूपल समता के पास आ बैठी, कुछ इधर उधर की बातें करने के बाद असली बात पर आ गई समता एक बात बता क्या तू यूँ ही अपनी जिन्दगी गुजार देगी ? आँसू छलक आये थे उसकी आँखों से उदास स्वर में बोली नही गुजारूँ तो क्या करूँ कोई रास्ता भी तो नहीं है? जो नसीब मे लिखा है उसे तो भुगतना ही पड़ेगा। रूपल थोड़ी शरारत से बोली, क्यूँ नसीब को बदला नहीं जा सकता ? क क्या कैसे चौक गई थी समता तू भी रूपल क्यूँ जले पर नमक छिड़कती है। रूपल ने अचानक एक सीधा सा सवाल दाग दिया समता तू चाहती है अविनाश के पास जाना । समता क्या जवाब दे उसे समझ नहीं आया, बोली क्या यह सम्भव है? फिर जैसे शका ने जन्म लिया कहीं अविनाश ने दूसरा चुपकर अब आगे मत बोलना रूपल ने अपना हाथ समता के मुँह पर रख दिया था।

रूपल सच बता तू आज ऐसी बातें क्यूँ कर रही है बात क्या है ? मुझसे यूँ पहेलियाँ मत बुझा। हसी आ गई थी रूपल को अपनी सहेली की बेताबी पर। अब बता क्या तू अविनाश के पास चलने को तैयार है? सच रूपल मेरा ऐसा भाग्य कहा मै अभी इसी वक्त चलकर माफी माग लूँगी उनसे तभी अजय पर्दे की ओट से बाहर निकल आया यही तो सुनना चाहता था वह अपनी बहन के मुँह से।

समता भैया को देख बनावटी क्रोध से बोली तो भैया ये सब आपकी चाल थी यह कैसा मजाक है भैया ? सुबक उठी थी वह अजय उसे प्यार से दुलारता हुआ बोला नहीं बहना ये कोई मजाक नहीं मै तो अपनी बहना के मन की थाह लेना चाहता था। धत शरमा गई थी वह अविनाश को पाने के नाम से ही

जो चमक समता के चेहरे पर उभर आई थी, आनन्दित कर गई थी अजय को। काश मै पहले ही कुछ कर पाता । खैर अब भी कुछ नहीं बिगड़ा ।

अब अजय को अविनाश से मिलकर उसे मनाना था। सोचा फोन करूँ नहीं यह ठीक नहीं रहेगा न जाने उसका क्या मूड हो वह क्या चाहता है ? दूसरे दिन अविनाश के शहर जाने की सोच अजय सोने को चला गया। पर रात भर सो न सका। रह रहकर मीनू याद आने लगी जैसे तैसे रात गुजारी। उधर समता को भी जैसे खुशी की एक किरण दिखाई देने लगी वह भी अविनाश के सपने देखती पूरी रात बैचेन रही।

दो दिन बाद रूपल तैयार होकर आई और समता को साथ ले घूमने का बहाना कर घर से निकली समता कुछ समझ नही पाई फिर भी उसका कहना नहीं टाल सकी और साथ चली गई जब ऑटो एक बगीचे के बाहर रुका और दोनो अन्दर जाने लगी तो सामने अजय के साथ अविनाश को देख समता सकते मे आ गई अरे इस तरह अविनाश से मिलाया जायेगा सोच भी नहीं पाई थी । अपलक कभी अविनाश को तो कभी अजय को देखती रही उसे अपना छोटा भाई आज बहुत बड़ा दिखने लगा था वह कृतज्ञ हो उठी थी।

तभी समता ने देखा अविनाश उसे ही देखे जा रहा है उसकी ऑखो मे मानो हजारो सवाल उमड़ रहे थे। समता भी कई सवाल लिये अविनाश को देखने लगी, समता को भी कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ? आखिर चुप्पी को अविनाश ने ही तोड़ा सुमी कैसी हो ? क्या तुम्हे मेरी बिल्कुल भी याद नहीं आई अब क्या कहना है चलना है या बिलख उठी थी समता प्लीज अब आगे मत बोलो मुझे और अधिक शर्मिन्दा मत करो। कहती कहती वह अविनाश के पाव मे गिर पड़ी थाम लिया था अविनाश ने उसे समता को मानो सब कुछ मिल गया था। वह भाव विभोर हो उठी कि रूपल की

आवाज ने चौका दिया यथार्थ में लौट आई थी वह ।

क्यों भई अपनी ही दुनिया मे डूबी रहोगी किसी और का भी खयाल है या नहीं, बेचारे अजय भैया का भी तो कुछ खयाल करो। शरमा कर परे हट गई वह तभी देखा सामने शरमाई सी मीनू खड़ी थी समता ने भाव विहल हो मीनू को गले लगा लिया

हे भगवान! आज तो तूने मुझे दुनिया जहान की खुशिया दे दी तेरा लाख-लाख शुक्र है भगवान किसी ने ठीक ही कहा है भगवान के घर देर है अन्धेर नहीं। समता को लगा इतनी खुशी वह सहन नहीं कर पायेगी, रो पड़ी थी वह, लेकिन ये आँसू बहुत ही सुख दे रहे थे आज उसे भाग्य पर विश्वास हो गया था। इतने महिनों का दु ख जैसे एक ही पल में उड़ गया था खुशियों के समुन्दर में और न जाने कितनी देर गोते लगाती कि टेक्सी रुकने से यथार्थ के धरातल पर आ गई।

घर में जाने पर सकोच हो रहा था, जैसे आज ही दुल्हन बनी हो। बेल की आवाज से जब अम्मा ने दरवाजा खोला तो सभी को देख वह विश्वास नहीं कर पा रही थी कहीं सपना तो नहीं देख रही अपने आपको चिकोटी काटी तो यकीन हुआ । आँखों से आँसू छलक आये थे पर अपने को सयत कर कुछ बोलने ही वाली थी कि मीनू पाव पर झुकी गले लगा लिया था उसे बेतहाशा चूमने लगी उसे मेरी बच्ची

तू आ गई आज मै मै धन्य हो गई। आँसूओ की झड़ी लग गई अजय ने रोका, बस माँ अब और नहीं, माँ अब सब ठीक हो जायेगा।

अविनाश और समता ने पाव छुए तो ढेरो आशीष दे डालीं बोली

जा बेटी जा अपने ससुराल बेटी तो अपने ससुराल में ही शोभा देती है जा बेटी सुखी रह। तभी बड़ी भाभी बाहर आई लेकिन वहाँ का माजरा देख उसके पावों तले की जमीन ही खिसक गई किसी से भी आँख उठाकर बात करने का भी साहस न रहा। मीन ने पाव छुए तो अनमनी सी आशीष दे

चुपचाप अन्दर चली गई।

बेटी का बाप

रामनाथ ने हिसाब लगाया तो कलेजा मुँह को आ गया, अब क्या होगा? पलग, अलमारी सोफा आदि में ही इतना खर्च हो जायेगा तो आगे क्या होगा? यह तो ठीक हुआ कि सारा फर्नीचर आसान किश्तों पर मिल रहा है, आखिर दोस्त समय पर काम आ ही गया, बेचारे ने इतना सामान किश्तों पर देना स्वीकार कर लिया, परन्तु इतनी किश्तों को चुकाते चुकाते तो उसकी सारी व्यवस्था डगमगा जाएगी। रामनाथ का मन कसैला हो गया सोचने लगे नौकरी भी केवल तीन वर्ष की रह गई है दमयन्ती को अपने बेटों पर पूरा भरोसा था पर वह भी कहा काम आ रहे है बेटो का नाम आते ही मन दु:खी हो गया, लोग कहते है तुम्हें क्या चिन्ता तीन बेटे है? हूँ तीन बेटे? मै तो नहीं चाहता था उनके सामने हाथ फैलाऊ पर दमयन्ती नहीं मानी उसके कहने पर गया उनके पास, तो तीनो ने ही अपनी गृहस्थी व खर्चो के रोने रो दिये।

रामनाथ स्वय पर झुझला गये, क्या जरूरत थी मुझे ऊचा खानदान और इन्जीनियर दामाद देखने की राधेश्यामजी का लड़का ही ठीक था पर मुझे ही क्लर्क रास न आया अब किसे दोष दूँ अपनी हैसियत से बढ़कर करने चला था, बेचारी दमयन्ती ने तो मना किया था, कि रिश्ता बराबरी मे ही निभता है ज्यादा ऊचे मत उठो पर कहाँ मानी थी उसकी बात? और बेचारी को डाटा था। वहाँ रिश्ता करता तो इतना जोड़ तोड़ तो नहीं करना पड़ता और फिर राधेश्यामजी ने सुरभि का हाथ मागा था और । अब जो हो गया उसे पूरा तो करना ही पड़ेगा।

क्या करूँ बेटी को सुखी देखना कौन बाप नहीं चाहेगा? वेदप्रकाशजी का इकलौता लड़का वह भी इन्जीनियर इस कारण वह रिश्ते को करने म उत्साही थे। वैसे वेदजी ने प्रत्यक्ष मे तो कुछ भी माग नहीं रखी पर उनकी घूमा फिराकर बाते करने की तरकीब से इन्हे परेशानी हो रही थी, उनकी बातो का सार यही निकलता कि किसी काम मे कमी न रह जाए वे भी अपनी सारी आकाक्षाएँ इसी विवाह मे पुरी करेगे, आखिर

एक ही लड़का तो है। अभी कुछ दिन पहले की ही तो बात है वेदजी की दो लड़किया सुरभि को देखने आयी थी, क्योंकि रिश्ता तय होने के समय वे अपनी ससुराल थी, किसी कारणवश नहीं आ सकी दोनो ही कैसी तारीफों के पूल बाध रही थी, हमारी शादी मे पिताजी ने ये दिया, वो दिया इतनी साड़िया दी यहा तक की हमारी सास को भी सोने के झुमके दिये दमयन्ती तो उनकी बातो से डर ही गई।

उनके जाने के बाद रामनाथजी से बोली, मुझे तो बड़ा डर लग रहा है देखो ना वेदजी ने अपनी बेटियों को कितना कुछ दिया है और वह भी तीन-तीन बेटियो को। हम उनकी बराबरी कैसे कर पायेंगे? अब रामनाथ को भी चिन्ता हुई व बैचेनी सी लगने लगी फिर भी लापरवाही दिखाते हुए बोले, क्यो करेंगे उनकी बराबरी, जैसा हमसे बनेगा कर देंगे वैसे भी वेदजी ने तो हमसे कुछ मागा भी नहीं है।

भड़क उठी थी दमयन्ती वाहजी आप भी कैसी बातें करते हो इतना भी नहीं समझते? सभी को अपने जैसा ही सीधा समझते हो। याव नहीं उस दिन वेदजी कैसी घूमा फिराकर बातें कर रहे थे, आपको थोड़े ही समझ आयेगी। चौके थे रामनाथ जो उन्हें कुछ याद आया हाँ वो कमरे वाली बात ही ना हाँ कैसा कह रहे थे कि सुरभि के लिये ऊपर बड़ा कमरा बनवाया है, छोटे कमरों में सामान रखने की कितनी परेशानी होती है? फिर आजकल की लड़कियों को तो सभी आराम की चीजे चाहिये उन्हें रखे कहाँ? टी वी कूलर ओर फ्रीज बिना तो जैसे दिन ही नहीं निकलते।

सच दमयन्ती मै तो उनकी बातों से कुछ भी नहीं समझ पाया मान गया तुम्हारी बुद्धि को हँस पड़ी दमयन्ती आप भी कभी तो कहते हो औरत की बुद्धि एड़ी मे होती है दोनो ही हँस पड़े। तभी दमयन्ती को भी याद आया वह बोली जानते हो उस दिन मै रस्मो रिवाज के बारे में पूछने उनके घर गई तो समधिन ने भी कितनी चतुराई से मुझे कहा था कि कपड़े ढग के न होंगे तो हमारी देवरानिया जिठानिया ताने देगी उन्हे तो बस मौका मिलना चाहिए और कह रही थी उनके जेठ के बेटो के विवाह में भी बहुत अच्छा दिया था हमारा भी

तो ले देकर एक ही लड़का है हमारा भी कुछ अच्छा तो लगना ही चाहिये। रामनाथ कुछ सोचते हुए बोले हॉ सभी ने मिलकर एक अच्छी भूमिका तैयार कर दी है अब तो हमे भी समझना होगा।

विवाह का दिन भी आ ही गया, आज वेदप्रकाश जी बहुत खुश नजर आ रहे थे खुश होते भी क्यू नहीं उनके इकलौते पुत्र का विवाह जो था, बड़ी शान से आतिशबाजी के शोर शराबे और नवयुवकों के डिस्को डास के साथ बारात लड़की वालों के दरवाजे पर पहुच गई, बारात का भव्य स्वागत हुआ। वेद बड़े प्रसन्न थे विवाह स्थल पर एक तरफ टी वी , फ्रीज, वाशिग मशीन व अन्य ढेरों सामान सजा था वेदजी सोचने लगे आज ये सभी मेरा होगा आज तक तो देता आया हू तीन बार दिया तब आज लेने का मौका आया है।

फेरे की रसम पूरी होने पर रामनाथ ने वेदजी को बुलाकर हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में कहा श्रीमानजी बहुत मुश्किल से ये जुटा पाया हूँ अपनी हैसियत से जैसा भी जुटा पाया हूँ स्वीकार कीजिये, और कुछ कमी रह गई हो तो क्षमा करें आज से ये कन्या आपकी हुई।

वेदजी के मन में विचार आया अच्छा मौका है क्यों न एक स्कूटर और माग लू आज तक देता ही रहा हूँ, आज चूका तो शायद फिर कभी मौका न मिले नजर उठाकर एकटक रामनाथजी की ओर देखने लगे कुछ पल यू ही देखने के बाद बोले ठहरो । बेचारे रामनाथ स्तब्ध रह गये उन्हें अपनी सास अटकती सी लगी कहीं कुछ और न माग लें ? सभी विस्मित से देखने लगे।

वेदजी बोले मुझे कुछ नहीं लेना कुछ नहीं चाहिये मुझे। रामनाथ घबरा गये मुझसे कोई भूल हो गई है क्या? वो थर थर कापने लगे । तभी वेदजी का गम्भीर स्वर उभरा गलती तुमसे नहीं मुझसे होने जा रही थी । लेकिन तुमने बचा लिया। मैने बचा लिया । हाँ जानते हो आज मैने तुम्हारी आँखों में अपने को देखा एक बेबस लाचार बाप को जो अपनी तीन-तीन बेटियो के दहेज

जुटाता-जुटाता यौखला गया जो दहेज देते समय उन बापों को कोसा करता, गालिया वेता, मन ही मन कुढ़ता, आक्रोश को दयाता, ऊपर से यनावटी हँसी का लवादा ओढ़े रस्में निवाहता गया, उस यक्त जिस पीड़ा को झेला है, मै ही जानता हूँ। अव तुम्हें उस पीड़ा को झेलने नहीं दूगा, तुम भी तो यह तीसरा दहेज दे रहे हो मै जानता हू तुमने अपनी हैसियत से वढ़कर ये सव किया है, कैसे किया है इसका भी मुझे पता है? रामनाथ वेदजी को अपलक देखे जा रहे थे, उन्हें लगा वेदजी कोई असाधारण इन्सान नहीं देवता है। वह अपने समधी के पैरों में गिर पड़े धन्य हो वेदजी, काश सभी आदमी आप जैसा ही सोचने लगे तो किसी भी याप को वेटी के जन्म पर क्षोभ न होगा।

रामनाथ की आँखे सजल हो आई उन्हें लगा अभी कुछ देर पहले जो मनो वोझ लिये घूम रहे थे मानों उतर गया। आज उन्हें वेदजी केवल एक वाप नजर आये। एक वेटी के याप।

एक और कन्यादान

आज शालू की सगाई थी घर में काफी रौनक थी, अगूठी की रस्म के लिए दूल्हा भी आ रहा था। पार्वती ने घड़ी की ओर निगाह डाली। नौ बज चुके थे। वह घबरा गई अरे! अभी तो कितना काम है मेहमान भी आने वाले होगे अभी तो तैयार भी होना है। तभी उसे सोना का ख्याल आया। वह आवाज लगाने लगी सोना ओ सोना जी माँजी। बालो का जुड़ा बाधती दौड़ती हुई आ गई वह।

घूरती निगाहों से पार्वती ने उसे देखा ये तैयार होकर कहा जाना है? किसे दिखाना है ये रूप करमजली अभी तो मेरे कलेजे मे ठण्डक भी नहीं पड़ी और तू है कि बेचारी सोना सकपका गई कहना तो चाहा माँजी ये साड़ी नई तो नहीं है बस थोड़ी प्रेस कर दी थी किन्तु कहाँ बोल पाई वह आँखो मे आँसू आ गये सोचने लगी इस साड़ी में क्या बुराई है साधारण प्रिन्टेड साड़ी ही तो है

तभी उसकी तन्द्रा टूटी अब यहाँ मेरे सिर पर खड़ी-खड़ी क्या कर रही है ? जा वो आटा रखा है उसकी पूड़ियाँ तल देना और हॉ वो पापड़ भी और सुन जैसे ही वो लोग आ जाएँ चाय का पानी चढ़ा देना फिर कुछ रुकती हुई बोली हॉ कान खोलकर सुन लेना ऐसी शुभ घड़ी में ये टसुएँ बहा कर अपशगुन मत करना मेरी बेटी की जिन्दगी का सवाल है। बेटे को तो तू पहले ही खा गई अब और कुछ और बोलती पर पर समय को देखते हुए चुप रह गई। पार्वती जैसे ही कमरे मे कपड़े बदलने जाने लगी तो शालू पर नजर पड़ी अरे शालू! ये क्या तू अभी तक यू ही खड़ी है तैयार नहीं होना क्या ? तू भी बस जा जल्दी कर।

माँ वो सोना भाभी किधर है? सोना का नाम सुनते ही बिफर उठी

क्या काम है उससे । खबरदार जो उसके सामने भी गई । क्या है माँ, थोड़ा मचलती हुई सी शालू बोली, मै उनके ही हाथ से तैयार होऊगी। क्या ? क्या कहा वापस बोलना तो पार्वती बिगड़ी। क्या बोलूँ माँ मैने कहा उनसे ही तैयार होऊगी उनका वो ब्यूटीशियन का कोर्स फिर कब काम आएगा ?

चुप कर, डाँट दिया था पार्वती ने खबरदार जो उसके सामने भी पड़ी कोई जरूरत नहीं है और ये ब्यूटी क्यूटी मै नही जानती चुपचाप जा और श्यामा भाभी से मदद लेकर तैयार हो जा।

शालू अपना सा मुँह लेकर रह गई वह माँ से बहस कर माहौल को बिगाड़ना नहीं चाहती थी माँ की आदत जानती थी कैसे विचार है माँ के ? बेचारी सोना भाभी मुझे कितना शौक था कि सगाई के दिन उनके ही हाथों अपना मेकअप करवाऊगी। दुल्हनों का श्रृंगार कितना अच्छा करती है? कितना सादा और आकर्षक कि लोग देखते रह जाएँ। शालू मन मसोस कर शीला भाभी को बुलाने चली गई।

बाहर गाड़ी के रूकने की आवाज ने घर में हलचल मचा दी आ गये, वे लोग आ गये जल्दी करो सभी बाहर की ओर भागे।

सोना भी अपनी प्यारी ननद के दूल्हे को देखने का मोह छोड़ ना सकी, खुशी से बाहर दौड़ी चली आई। उस क्षण खुशी के आवेग में वह अपनी स्थिति भूल गई थी पार्वती की नजर जैसे ही उससे टकराई तो उसने आँखे तरेरी बेचारी सोना उल्टे पाँव अन्दर लौट आई।

रसोई मे आकर चाय का पानी चढ़ा दिया। तभी पार्वती आकर कहने लगी। क्या तुझसे मेरी बेटी की खुशिया सहन नहीं हो रही थी जो हर जगह अपनी मनहूस सूरत लेकर आ जाती है? कितनी बार कहा कि अब रसोई से बाहर निकली तो ठीक नहीं होगा ।

बाहर से गीतो के स्वर उभरने लगे, चाय नाश्तों का दौर, हँसी-ठहाके कैमरे की खट-पट और बैण्ड बाजों का शोर कितना खुशनुमा माहौल था। सभी उन रंगीनियों में डूबे थे । सोना अपनी प्यारी शालू को दूल्हन बने देखना चाहती थी पर सास के डर से हिम्मत नहीं पड़ी।

सोना पूड़ियाँ तलती उस माहौल से बिल्कूल दूर अपने अतीत में खो गई कैसा सुनहरा ससार था उसका कितना प्यारा, सुन्दर उसको जी जान से चाहने वाला उसका पति था। कैसे पख लगाकर उड़ गये थे वे दिन याद आया सोना को, जब विवाह के बाद पार्टियों का दौर चला था, सभी दोस्तों के यहाँ और खास रिश्तेदारों के यहाँ।

रोज ही तो सज सवर का निकलना होता, यदि जेवर एक भी कम पहन लेती तो माँजी नाराज हो जाती। उफ! कैसा लदना पड़ता था उस पर भारी जरी की साड़ियाँ और मेकअप रोहन देखकर कितना खुश होता। कहता सोना तुम तो सचमुच सोना हो यूँ ही सजी सवरी रहा करो कैसा हँसती थी वह। धत् तुम्हे ये सब पहनना पड़े तो जानो ।

खिलखिलाता रोहन कहता भई हमारे ऐसे भाग्य कहाँ और दोनों ही हँस पड़ते । उसके इसी शौक से तो उसे माँ ने ब्यूटीशियन का कोर्स करवाया था। माँ भी छेड़ती थी बन्नो ऐसे ही सजती रहोगी तो घर का काम क्या तेरी सास करेगी ? कैसी शरमा जाती थी वह। बेचारी माँ कहा जानती थी कि उसकी बेटी जीवन भर सज सवर नहीं पायेगी।

सोचते सोचते आँखे भर आई आँसू से धुधलाई आँखों से पूरी सही नहीं डाल पाई और तेल के गरम छींटें हाथ पर उछल गये कराह उठी थी सोना पर माँजी के भय से चुपचाप सह गई आँखों से आँसू पोंछ डाले न जाने कब माँजी आ जाये और ।

रात को थक हारकर जब सोने लगी तो दिन भर की घुटन

जैसे बाहर आने को बेताब थी। आखिर कठिनाई से रोके आँसू कब तक ठहर पाते ? निकल ही गये बहुत रोई थी अपनी किस्मत पर सोचने लगी, मै किसके सहारे जिऊगी। ये पहाड़ सा जीवन कैसे कटेगा ? मुझे मर जाना चाहिये आखिर कब तक ये सब सह पाऊगी। पर पास सोये नन्हें अक्षत पर नजर पड़ी तो बिलख उठी थी, मै भी क्या सोचने लगी इस नन्हीं जान का क्या होगा ? मै भी केवल अपना सोचने लगी इसका क्या जो अभी इस दुनियाँ को देख भी न पाया मात्र आठ माह का अबोध बालक जिसके जन्म से पूर्व ही पिता का साया उठ गया और मै अब उसे माँ की गोद से भी वचित कर देना चाहती हूँ । हे भगवान! मै क्या सोचने लगी हे ईश्वर! कभी भूल से भी ऐसा विचार मेरे मन मे मत आने देना। और भावावेश में नन्हें अक्षत को सीने से भींच लिया । आखिर एक माँ की ममता की जीत हुई।

तभी गीले हुए तकिये को देख सोचा, बेचारा ये निर्जीव तकिया इसका भी कैसा भाग्य? एक ये ही है जो मेरे आँसूओं को अपने में दफन कर देता है और उफ भी नहीं करता हमदर्दी हो आई थी उससे। वो उसे अपना एक सहारा सा माने लगी, दु ख का साथी वह तकिये को लेकर सहलाने लगी।

दो दिन बाद ही विवाह का मुहूर्त था। मेहमानों का आना शुरू हो गया था काम काज से फुर्सत ही नहीं मिलती थी। एक दिन सुबह-सुबह जब पार्वती दूध लेने उठी तो शालू को सोना के कमरे से निकलता देख ठिठक गई । हाथ में अटैची थी। अरे शालू! ये क्या? यहाँ क्या कर रही है? शालू सकपका गई मानो चोरी करते हुए पकड़ी गई हो। हकलाहट में कहने लगी क कुछ नहीं माँ यूँ ही रात को बक्सा भाभी के कमरे में रह गया था।

क्यूँ ले गई थी वहाँ ? क्या काम था ? कड़क कर बोली वह। कुछ नहीं भाभी को मेरी साड़ियाँ और जेवर दिखाने ले गई थी। बड़बड़ाने लगी थी पार्वती इस छोकरी की मति मारी गई है कुछ भी आगा पीछा नहीं सोचती सुबह-सुबह उस कुलक्षिणी

का मुँह देख आई। इसके भले का कहूँ, पर ये है कि समझती ही नहीं और मुझे ही पागल समझती है।

फिर तो तूफान आ गया उस दिन शालू को इतना डाँटा कि बस उसे हिदायत दे दी कि जब तक विवाह होकर, वह विदा नहीं हो जाती उसकी परछाई भी नहीं पड़ने देगी अपने पर। बेचारी शालू क्या कर सकती। माँ का विरोध करने की उसमें हिम्मत नहीं थी। उसमें क्या किसी में भी नहीं थी । पिताजी तक समझा-समझा कर हार गये पर मजाल है कि किसी कि बात मान जाए या उन पर असर हो जाए। उनके आक्रोश को सभी चुपचाप सह जाते थे।

आखिर आज विवाह का दिन भी आ पहुँचा। सुबह-सुबह हवन था । सभी बाहर चौक मे बैठे थे। मायरे (मामा के घर से आये कपड़े) की रस्म भी वहीं पर होनी थी। महिलाएँ मगल गीत गा रही थी। सोना तो बस रसोई में ही कैद होकर रह गई थी। हर किसी की फरमाइश पर चाय बनाकर दे रही थी तभी नन्हे अक्षत का जोर से रोने का स्वर सुन सोना अपने पर नियन्त्रण न कर सकी। घबराकर अपने कमरे की ओर भागी जहाँ वह सोया हुआ था जाकर देखा वह जाग गया था और पलग से नीचे गिर गया था।

सोना उसको चुप कराने का यत्न कर ही रही थी कि बाहर से मिले जुले स्वर ने उसको चौका दिया कुछ औरतें उसकी सास से कह रही थी क्या पार्वती बहन इसको कुछ समझती नहीं ऐसे शुभ अवसर पर कैसी चली आई थी बाहर। भई इतना घोर अन्याय, राम राम कैसा जमाना आ गया किसी के शुभ की भी परवाह नहीं अपना सुहाग तो उजाड़ चुकी और अब ।

आगे नहीं सुन सकी थी वह डरने लगी अभी सास आयेगी और अपना भाषण पर पार्वती शायद व्यस्तता के कारण आ न सकी।

कमरा बन्द कर बिलख उठी थी वह। सामने रोहन की तस्वीर देख कहने लगी क्यो छोड़ गये हो मुझे किसके सहारे छोड़ गये? तुम

तो कहते थे कि जनम जनम का साथ है, और एक जनम भी नहीं निभा सके ऐसा क्यूँ किया क्यूँ ? मानो सामने रोहन खड़ा हो। तुम तो मुझे सदा सजी सवरी देखना चाहते थे ना, अब देखो मेरा ये रूप। सब तुम्हारे ही कारण हो रहा है मै क्या करूँ? बताओ रोहन और इस नन्ही जान को क्यों छोड़ गये ? अनाथ बनाकर।

कितना खुश थे यह जानकर कि तुम बाप बने वाले हो, बच्चे को देखे बिना ही चले गये। हे भगवान! मैने तेरा क्या बिगाड़ा था मेरे साथ ऐसा क्रूर खेल क्यूँ खेला।

दरवाजे पर दस्तक सुनकर उसकी तन्द्रा टूटी डरती-डरती किवाड़ खोलने को बढ़ी शायद सास ही हो। परन्तु सामने तो बाबूजी खड़े थे बेटी सोना मुन्ना कहाँ है मै सभी जगह उसे ढूँढ आया लाओ उसे मुझे दे दो।

सोना ने चुपचाप बच्चे को पकड़ा दिया। बाबूजी ने सोना का उदास चेहरा देखा बिना कुछ पूछे बहुत कुछ जान गए थे। वह सोना को कुछ पूछकर उसके घावों को कुरेदना नहीं चाहते थे अत उसे कुछ न कह कर चले गए। पर उनका मन कसैला हो गया। बेचारी सोना घर में इतनी खुशियाँ और वह उसकी आँखे गीली हो आई। पर पत्नी के स्वभाव के आगे विवश थे। इच्छा तो हुई अभी सोना का हाथ पकड़ कर बाहर ले आए पर पार्वती कहीं कोई बखेड़ा न खड़ा कर दे और खुदा न खास्ता कोई अनहोनी हो भी जाए तो बेचारी निरीह बच्ची को वो कहीं का न छोड़ेगी सभी दोष उस मासूम पर ही मढ़ देगी।

एक पल को कोई विचार उनके मस्तिष्क को झकृत कर गया और उन्होंने उसी पल कोई बहुत बड़ा फैसला कर लिया और आश्वस्त होकर चले गए मानो कोई बोझ उतर गया हो।

विवाह की सभी रस्में पुरी हो गई पर मजाल कि किसी ने सोना को याद भी किया हो। कैद होकर रह गई थी कमरे में। हा बाबूजी ने अवश्य

समय समय पर खाना लाकर उसके कमरे में रख दिया वरना तो किसी को भी उस अभागन का ख्याल भी नहीं आया। खाने का बिल्कुल मन न था पर बाबूजी की भावना को ठेस न पहुँचे अत जैसे-तैसे थोड़ा बहुत खा लेती, एक वे ही तो थे जिन्हें उसकी परवाह थी।

विदाई गीत के स्वरों ने सोना को झिझोड़ दिया महिलाओं के धीमे उदास स्वर ऐ सासू गाल (गाली) मत दीजे ऐ सासू मौ तो दूसरी तरफ बैण्ड वालो ने बाबूल की दुआएँ की धुन छेड़ दी । सोना तड़फ उठी, आज उसकी बहन जैसी प्यारी शालू विदा हो रही थी और वह उसे देख भी नहीं पा रही । बैचेन हो उठी थी वह। इधर-उधर चक्कर काटने लगी, क्या करू बस एक झलक पा लेना चाहती थी। तभी उसकी नजर उस बन्द खिड़की की तरफ गई जो बाहर सड़क की ओर खुलती थी। न जाने कब से बन्द पड़ी है । उस खिड़की से भी उसकी मधुर यादें जुड़ी थी। घण्टों रोहन के साथ खिड़की से बाहर के दृश्य देखा करती पर अब जैसे रोहन के साथ ही वह भी बन्द हो गई। धीरे से खोला था सोना ने पर्दे की झीरी में से जैसे ही बाहर झाँका तो धक् रह गई शालू की आँखें उधर ही टीकी थी तो क्या शालू भी ? आँखे भर आई थी शालू का अपने प्रति लगाव देखकर।

दोनो की आँखें मिली और उस क्षण दोनों ने न जाने कितना कुछ एक दूसरे को कह दिया था। आँखो ही आँखों मे विदा हुई कोई नहीं जान पाया आशीर्वाद की मुद्रा मे अपना थोड़ा सा हाथ दिखा मन ही मन ढेरो आशीर्वाद दे डाले थे उसने, शालू की आँखें तो अविरल गति से बहने लगी थीं । उन आँसुओं की कीमत कोई नहीं जान पाया सभीको विदाई के आँसू ही दिख रहे थे पर शालू और सोना ही जानती थी इन आँसुओं की कीमत ।

आज सोना अपने को असहाय सा महसूस करने लगी शालू कितना ख्याल रखती थी उसका जब भी सास लड़ती वह ढाल बन कर खड़ी हो जाती थी । कभी-कभी तो माँ की बातो का विद्रोह भी करती। मॉं बहुत चिढ़ती थी पर बेटी के आगे कभी-कभी

असहाय सा पाती थी। ऐसा सशक्त सहारा आज छूट गया था।
दिन बाद सब कुछ सामान्य हो गया कि एक वज्रपात हुआ
भाभी श्यामा को अचानक हार्ट अटैक हो गया और
पहले ही दौरे में बच न सकी थी। घर में सन्नाटा छा गया।

तूफान आने के बाद जैसे शान्ति पसरी हो वैसा वातावरण, र
चुपचाप रहते, यन्त्रवत् काम करते जैसे जिन्दगी थम गई
बाबूजी व अम्माजी एकदम टूट से गए और बड़े भैया तो
बिल्कुल ही अनमने से होकर रह गये।

बिखरे बाल, बढ़ी दाढ़ी गुमसुम से बैठे शून्य में ताक
रहते, किसी से कोई बात तक नहीं करते। उन्हें श्यामा भाभी का दु
अन्दर तक तोड़ गया था। उनकी हालत देख सोना को भी बहुत तर
आता स्वय इस आग से गुजरी थी अत उस तपिश को महसू
कर रही थी। अम्मा तो बस भैया के आगे पीछे ही घूमती। उन्हें भाभी
जाने का जितना गम नहीं था उतना भैया के गमगीन रहने का था।

धीरे-धीरे सब समान्य होने लगा। कहते है समय हर घाव को भ
देता है सब कुछ पुराने ढर्रे पर चलने लगा हाँ अम्माजी में कु
बदलाव अवश्य आ गया । अब वे सोना पर बात बेबात बिगड़
नहीं थी।

कुछ दिनों से घर में मेहमानों की आवाजाही बढ़ने लगी। सोना क
उस समय आश्चर्य हुआ जब उसे पता चला कि भैया वं
पुन विवाह की चर्चा जोरों पर थी, कई रिश्ते आ रहे थे।

सोना सोचने लगी कैसे लोग है ? अभी श्यामा
भाभी की चिता की राख ठण्डी भी नहीं हुई और नई बहू लाने की
कोशिशें हो रही है उसे क्रोध आया समाज की दोहरी मान्यताओ
पर - एक तरफ जवान बेटे की मौत पर मासूम बहू पर इतना
अत्याचार और दूसरी तरफ पत्नी के मरने पर उस पुरुष से इतनी
सहानुभूति खैर पुन विवाह की तो वह कल्पना भी नहीं करती।
आखिर रोहन की यादें कैसे भूल पाती पर उसके साथ भी भैया

जैसा स्नेहिल व्यवहार तो किया ही जा सकता है।

उसे समाज की इस दोगली नीति पर हसी आ गई। इस उम्र में जब तीन बच्चों के पिता है वे, उनकी पुन गृहस्थी बसाने की अम्माजी को कितनी चिन्ता है । जब तब बाबूजी से इसकी चर्चा करती भैया के सामने चुप हो जाती। उन्होंने तो इन्कार कर दिया है पुन विवाह हेतु, पर अम्माजी है कि पीछे पड़ी है, उनकी गृहस्थी का वास्ता देकर बच्चो के भविष्य की दुहाई देकर अपने न रहने के बाद की जिम्मेदारियों का अहसास दिला आखिर भैया से हाँ करवा ही ली। या यों कहें भैया भी माँ के आगे थक हारकर 'जैसी तुम्हारी इच्छा' कह कर झझट से मुक्ति पा गये। अब तो रोज ही कोई न कोई आता।

कई बेबस लाचार बाप आये जो अपनी बढ़ती उम्र की लड़कियों के लिये, जो बिना दहेज के विवाह की उम्र पार कर चुकी थी। कुछ परित्यक्ता व विधवा के लिये भी आये थे। बाबूजी ऐसी ही किसी लड़की को लाना चाहते जो जिम्मेदारी सम्भाल सकें परन्तु माँजी तो कुवारी लड़की को लाने पर जोर देती रहीं

आखिर एक गरीब बाप की विवश बेटी अपने अरमानो की चिता जलाकर इस घर मे बहू बनकर आ ही गई । साधारण स्वागत के साथ उसका आगमन हुआ । आते ही बिना जन्म दिये ही तीन बच्चों की माँ बन गई। उम्र का अन्तराल भी शायद दस वर्ष का तो होगा ही । न कोई मान मनुहार न सजना सवरना न ही किसी नाते रिश्तेदार के यहाँ जाना न किसी का आगे-पीछे फिरना बस एक ठण्डा सा माहौल।

सोना ने अपने नवविवाहित जीवन की तुलना जब इससे की तो उस बेचारी के भाग्य पर तरस आया।

रानू से सोना का बहुत अच्छा मेलजोल हो गया। दोनो की अच्छी पटने लगी। सोना भी अपनी हमउम्र सहेली पाकर अपना दु'ख कुछ भूलने लगी थी। थोड़ा बहुत हसी मजाक भी हो जाता था और दोनो ही कभी-कभी अपनी मन की परते एक दूसरे के सामने खोलकर जी हल्का

कर लेती थी । पर पार्वती को दोनो का साथ फूटी ऑखो नहीं भाता। वह जैसे-तैसे रानू को बरगलाने की कोशिश करती पर शायद रानू भी असलियत जान गई थी, अत बात सुनी-अनसुनी कर जाती।

बाबूजी दोनों को हसता बोलते देखते तो उन्हे बड़ा सुकून मिलता एक दिन की बात है पार्वती कहीं रिश्तेदार के यहॉ गई हुई थी, बड़े भैया भी साथ गये थे, इसलिये रानू और सोना को देर रात तक बाते करने का अवसर मिल गया। अचानक बाबूजी उधर से गुजरे उन्हें रानू की दर्द भरी आवाज ने रूकने को मजबूर कर दिया, छिपकर बाते सुनना उनकी फितरत न थी पर जो पीड़ा उन स्वरो मे दबी थी उनसे वे जड़वत् हो गये।

रानू का स्वर उभरा था दीदी मै कैसे खुश रहू आप हरदम कहती है पर कैसे कहू वो तो इतने खोये-खोये रहते है कि उन्हे मेरा बिल्कुल भी ख्याल नहीं हर वक्त श्यामा ऐसी थी वैसी थी ऐसा करती, वैसा करती इन कपड़ों मे ऐसी लगती, मै कितना कोशिश करती हू। सज सवर कर सामने जाती हू तो तारीफ के दो शब्द भी नहीं निकलते हर वक्त उससे तुलना करने लगते है श्यामा श्यामा तग आ चुकी हू। ये नाम सुनते-सुनते मेरा तो कोई अस्तित्व ही नही उनसे इतना ही लगाव था तो क्यू मुझे ब्याह लाये? क्यू मेरा जीवन बर्बाद किया? कहते-कहते सिसक उठी थी ।

सोना ने उसका हाथ थाम धीरज बन्धाया सोना ने हालाकि दो वर्ष का ही वैवाहिक सुख भोगा था पर इस रिश्ते की तमाम गहराइयो तक पहुच चुकी थी वह जानती थी रानू का कोई दोष नहीं है वह एक कुवारी लड़की थी, उमग भरा दिल था कई अरमानो को सजोये वह इस घर मे आयी थी। सोना बोली भाभी देखो । क्या भाभी भाभी करती हो तुम्हारे बराबर की हूँ ? सोना हसी उम्र बराबर है पर हो तो जेठानीजी दोनो हस पड़ी।

हा तो मै कह रही थी भाई साहब की बातो का बुरा मत मानो

इतने समय श्यामा भाभी के साथ रहे तो एकदम तो भुला नहीं पायेंगे थोड़ा वक्त तो लगेगा, धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा। सब्र से काम लो बेचारे भैया कब चाहते थे कि दूसरा विवाह हो पर अम्माजी की जिद वह आगे बोलती कि रानू बीच में ही बोल पड़ी सोना एक बात कहूँ, अम्माजी को तुम्हारा दूसरा विवाह करने का ख्याल नहीं आया, जबकि तुम उम्र में उनसे कितनी छोटी हो रानू की आँखें सोना के चेहरे पर टिकी थी सोना रो पड़ी भाभी क्या कह रही हो मै कभी इस बारे में सोच भी नहीं सकती फिर अपने रोहन को कैसे भूल पाऊगी और ये मासूम क्या इसे यू ही छोड़ सकूगी ? नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता रानू मन ही मन सोचने लगी इस समाज का भी अजब दस्तूर है, हर वक्त औरत ही क्यू बलि चढ़ती है। क्यू औरत के मन की कोई नहीं सुनता यह क्या चाहती है? उसे समाज की दोहरी मान्यताओं पर हसी आई। उसे लगा उसने सोना का दिल दुखाया बात बदलते हुए बोली सोना हर वक्त श्यामा श्यामा के जिक्र से मै दुखी हो गई हूँ अब नहीं सहा जाता कहते है न कोई औरत अपने पति के नाम से किसी और का नाम जुड़ना भी सह नहीं पाती सोना बीच में बोली पर श्यामा भाभी तो मर चुकी है । रानू लम्बी सास खींचती बोली हाँ वह मर चुकी है तुम नहीं समझोगी सोना वह मर कर भी जिन्दा है हर वक्त यहीं मेरे आसपास रहती है कहने को जब वह कमरे में मेरे पास होते है तब भी मुझे लगता है वह भी यहा मौजूद है उसकी नस-नस में उनकी हर बात में हर याद में केवल श्यामा ही है । कहते कहते सिसक उठी थी रानू । बाबूजी से और नहीं सुना गया रानू की व्यथा उन्हें व्यथित कर गई उन्हें लगा बेटे का पुनर्विवाह कर बेटे के दु:ख से तो निजात पा ली पर किसी की बेटी को दर्द उपहार में दे दिया। उन्हें पार्वती पर गुस्सा आने लगा क्यू मै उसकी जिद के आगे झुक गया? काश उसकी बात नहीं मानता और किसी विधवा को ही इस घर में लाता तो अच्छा था इस तरह रानू के अरमानो को मिटा के कितना बड़ा पाप किया गुस्से में उनकी मुटठियाँ कस गई इस पाप का

प्रायश्चित सोना को नया जीवन देकर ही करुगा। इस दृढ निश्चय के साथ वे सोने चले गये, रात बड़ी बैचेनी से कटी ।

सुवह उठते ही, सोना को कहा वेटी मै जरूरी काम से वाहर जा रहा हू, शाम तक लौट आऊगा। वाबूजी अपने दृढ़ निर्णय के साथ पास ही के शहर में अपने स्व मित्र के पुत्र कविश के पास पहुच गये। कविश एक सुन्दर, सुशील व होनहार लड़का था, दुर्भाग्य ने उसके जीवन को ग्रहण लगा दिया था तीन वर्ष का वैवाहिक जीवन और एक प्यारी सी बच्ची को छोड़ उसकी पत्नी चल बसी थी पत्नि प्रीति का गम उसे तोड़ गया माँ के लाख समझाने पर भी पुनर्विवाह की सहमति नहीं दी वह अपनी प्यारी वेटी पर किसी सौतेली माँ का साया भी नहीं चाहता था। वाबूजी को ऐसे ही लड़के की तो तलाश थी जो सोना की पीड़ा समझ सके।

उन्होंने कवीश के सामने जव अपनी बात रखी तो वह तिलमिला उठा वाबूजी मुझे माफ कर दो मै आपका कहा कभी नहीं टालता आपको मैने सदा पिता तुल्य समझा परन्तु मै ऐसा कुछ भी नहीं कर पाऊगा, मुझे नहीं लगता कि मै किसी लड़की को खुश रख पाऊगा फिर क्यू किसी मासूम को लाकर उसकी खुशियाँ उजाड़ उसे गमों में डूबो दू । मै कभी उसके साथ न्याय नहीं कर पाऊगा।

वाबूजी ने कहा वेटा मै किसी लड़की की वात नहीं कर रहा मै तो एक वदनसीव की वात कर रहा हू जिसकी कोई खुशियाँ ही न बची तो उजड़ेगी कैसे? वेटा मै तो अभागन बहू सोना की वात कर रहा हू। वेचारी ने देखा ही क्या है ? वाबूजी ने जव उसे सोना की स्थिति से परिचित करवाया तो कविश का मन पसीज उठा वह भी सोचने पर विवश हो गया उसे सोना पर तरस आया वेचारी कैसे ये जिन्दगी का सफर तय कर पायेगी मै मै तो अपने ही दु:ख को वड़ा मान वैठा था वेचारी सोना को नारी होने का कितना वड़ा वैधव्य का अभिशाप भोगना पड़ रहा है ये आरोप लाछन सामाजिक वन्धन कितना कुछ झेलना पड़ रहा है। मेरे साथ तो

ऐसा कुछ भी नहीं है सभी की सहानुभूति और प्यार मेरे साथ है
उसने अपने आप से प्रश्न किया अब क्या सोच रहा है ?
बचा ले उसके जीवन को तुम्हें भी तो एक सहारा चाहिये ना
तेरी बच्ची को भी माँ मिल जायेगी ये नेक काम कर ही ले ।

बाबूजी की आवाज से उसकी तन्द्रा टूटी बेटा मै तो किनारे पर खड़ा हूँ न जाने कब भगवान के घर से बुलावा आ जाये मै चैन से मर भी नहीं पाऊगा, बेटा बहुत ही आशा से मै तुम्हारे पास आया हूँ सोचो तुम्हारी इस मासूम बच्ची को भी माँ की जरूरत है *मै विश्वास दिलाता हू सोना एक अच्छी माँ साबित होगी* बाबूजी कविश को चुप देख उसका चेहरा देखने लगे उन्हे निराशा होने लगी तभी कविश बोला बाबूजी वो सोना का बच्चा ? उनको जिसका डर था वही सामने आ गया एक पल को सोचा पुरुष कितना स्वार्थी होता है औरत चाहे विधुर से विवाह कर उसकी पूर्व पत्नी के बच्चों की माँ बन सकती है चाहे सौतेली ही सही लेकिन पुरुष दूसरी औरत के बच्चे को क्यू नहीं अपना सकता उन्हें मन में बड़ा दु:ख हुआ एक कसक सी उठी। तो क्या सोना अपने कलेजे के टुकड़े को अलग कर पायेगी, यह सोच कर उन्हें चक्कर सा आने लगा ।

बाबूजी आपने कुछ जवाब नहीं दिया मुन्ना के बारे में हड़बड़ा उठे एकदम बोले उसकी चिन्ता मत करो बेटा वो हम देख लेंगे। तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है।

नहीं बाबूजी आप गलत समझ रहे है मै मै तो कह रहा था कि वह भी सोना के साथ ही रहे तो हमे लड़का लड़की दोनों ही मिल जायेगे और जब मै बच्ची की खातिर दूसरा विवाह नहीं कर रहा तो सोना कैसे रह पायेगी उसके बिना। मै एक अबोध से उसकी माँ छिनकर अपनी बच्ची को माँ नही दे सकता। यदि यह शर्त मन्जूर हो तो मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार है।

बाबूजी अवाक् रह गये उन्हे तो ऐसी उम्मीद कतई नहीं

थी, वास्तव मे कविश कितना नेकदिल इन्सान है। खुशी से वे पगल गये, कविश को गले लगा लिया। धन्य हो बेटा उनकी आँखें हो आई।

कविश ने माँ को आवाज लगाई माँ माँ दौड़कर आई जब उसने कविश का निर्णय सुना तो धन्य हो बाबूजी के हाथ जोड़ती बोली भाई साहब मै इतने दिनों से नहीं मना पाई आपने तो कमाल ही कर दिया फिर सोना बहू पाकर तो मै धन्य हो जाऊगी । बाबूजी ने मुन्ना के बारे मे शा के विचार जानने चाहे बोले भाभी वो मुन्ना वो कहते उसके पहले जैसे वह तैयार बैठी थी अरे भाई स उसकी क्या चिन्ता ? सोना मेरी बहू होगी तो मुन्ना तो मेरा होगा ना । फिर रोहन क्या मेरा बेटा नहीं था फिर मुझे भी की कितनी चाह थी यह इच्छा भी पुरी हो जायेगी। हाँ एक कहे देती हू अब कोई और बच्चा इस घर में नहीं आयेगा कह कविश की ओर देखने लगी कविश शरमा गया तीनें खुशी से हँस पड़े तीनों ही तो आज न जाने कितने दिनों खुलकर हँसे थे। कविश के चेहरे की हँसी माँ को निहाल कर गई बाबूजी सोचने लगे पार्वती और शान्ति भाभी में कितना फर्क है काश पार्वती भी ऐसी होती खैर आज उनके मन का उतर गया था।

सोना को बहुत मुश्किल से तैयार कर पाये थे वे मुन्ना व बात छिपा गये थे । इधर सोना मुन्ना के विछुड़ने की कल मात्र से ही काँप उठती पर क्या कहती किसे कहती अपने आ भाग्य भरोसे छोड़ दिया था कभी सोचती ऐसी क्रूर सास से ि छुटेगा तभी पिता तुल्य श्वसुर सामने आ जाते तो कलेजा भर अ बाबूजी मेरे लिये कितना कुछ करते है तभी तो उनका वि करने की हिम्मत नहीं होती ।

आखिर विवाह का दिन आ ही गया एक सादे समारोह मे फेरे रस्म अदा हुई। कन्यादान की रस्म बाबूजी ने अदा की और जब काठ

की बारी आई तो उन्होंने सोने के कगन के साथ ही दुल्हा दुल्हन के फैले हाथ पर मुन्ना को रख दिया सभी अवाक् थे सभी एक दूसरे को देखने लगे मानो पुछ रहे हो ये क्या है? लेकिन सोना तो ये अनमोल तोहफा कन्यादान में पाकर धन्य हो गई। सोना की आँखें कविश के चेहरे पर टिकी थी। मानो उसकी स्वीकृति माग रही हो, कविश ने जब मुस्कुराते हुए हा में स्वीकृति दी तो वह कृतज्ञ हो उठी थी

उसे लगा बाबूजी ने उसे नया जीवन दे दिया है। भाव विह्वल हो बाबूजी से लिपट कर रो पड़ी थी, लगा जैसे उसके पिता ही एक बार और अपनी बेटी को विदा कर रहे हो, उपस्थित जन समूह भी इस अनोखी मिसाल को देख सराहना करने लगे।

एक सम्मानित दरजा

बाबूजी खाना तैयार है दीपा ने जैसे ही आवाज लगाई कि बाबूजी एकदम चले आये ला बेटी जल्दी रख आज तो बड़ी जोर की भूख लगी है दीपा उनके उतावलेपन पर हस पड़ी उसे लगा जैसे कोई छोटा बच्चा भूखा हो ओर खाने के लिये मचल रहा हो। बहुत समय बाद अपनी पसन्द का खाना देखकर तो ओर भी खुश हो गये।

लेकिन यह क्या ? उनकी ऑखों में आँसू! चौंक पड़ी थी दीपा बाबूजी क्या हुआ ? क क कुछ नहीं बेटा तेरी माँ की याद आ गई ऐसा लगा जैसे बरसो बाद तेरी माँ के हाथ का बना खाना मिला हो कहते कहते रो पड़े थे वह। दीपा का हाथ का कौर हाथ में ही रह गया उसकी भी ऑखें भीगने लगी उसकी आँखे देख बाबूजी सम्भले चेहरे पर बनावटी मुस्कान लाते हुए कहने लगे बेटी याद है न खाना बनते ही तेरी माँ कैसा शोर मचा देती थी जल्दी आओ गरमा गरम खा लो, और तुझे तो हमेशा मेरे साथ ही बिठाती, कहती बेटी पराया धन है चली जायेगी ये है तब तक तो इसके साथ खाओ आज कई दिनो दिनों क्या महीनों बाद तेरे साथ खा रहा हू ना तो उसकी याद आ गई दोनों चुपचाप खाने लगे।

खाना खा लेने के बाद हाथ पोछते हुए एक ठण्डी सास ली ओर बोले क्या करू बेटी तू तो दोपहर को ही आती है और शाम होते ही बच्चों का और अखिल के आने का बहाना कर लौट जाती है फिर बहू को कहने की भी हिम्मत नहीं होती कि खाना जल्दी बनाकर तुझे खिला दे, दीपा बाबूजी की विवशता पर तड़प उठी बोली बाबूजी आप आराम कर लीजिये मै रसोई समेट कर आती हू ।

दीपा को याद आया वो दिन शायद दो-तीन बरस पहले की बात है वह अपने घर जाने लगी थी शाम को चार बजे होंगे बाबूजी ने

कहा था, बहू आज पकोड़ी खाने को मन कर रहा है थोड़ी सी बना दे दीपा भी खाकर चली जायेगी। कैसा झल्लाई थी भाभी, तेल के भाव कैसे आसमान को छू रहे है, ऊपर से खासी हो रही है उसकी परवाह नहीं दवा तो हमें ही लानी पड़ेगी न ' देखो बुढ़ापे में कैसी जीभ चटोरी हो रही है। आगे नहीं सुन पाई थी वह पिताजी आज मुझे जल्दी जाना है, फिर कभी। बेचारे बाबूजी मन मसोस कर रह गये थे उस दिन के बाद कभी भी उन्होंने खाने को नहीं कहा। उसका मन हुआ था अभी पिताजी को अपने साथ ले जाये पर वे आयेंगे थोड़े ही आखिर मै बेटी जो ठहरी फिर लोग क्या कहेंगे कि बात आड़े आ जायेगी काश मै बेटा होती हे भगवान ! तूने बेटी को ऐसा पराधीन क्यू बनाया पीहर मे पराया धन, ससुराल में पराई जाई कहीं भी अपना नहीं जहा अपनी मर्जी चल सके।

बाबूजी की आवाज ने उसे वर्तमान मे ला दिया बेटी दीपा अशोक और बहू को लौटने मे अभी तीन चार दिन लगेगे तू ऐसा कर अखिल को फोन कर दे वो बच्चों को लेकर शाम को इधर ही आ जाये, तीन चार दिन सभी साथ रह जायेगे, वैसे भी एक ही शहर में होने से अखिल का यहा रहने का काम ही नहीं पड़ता और जमाई राजा के साथ तो हमे भी थोड़ा माल ताल खाने को मिलेगा। दीपा बाबूजी का चेहरा देखती रही कितना निश्चल भोला भाला चेहरा खुशी उनके चेहरे से फूटी पड़ रही थी मानो इस खुशी के पलो को भरपूर जीना चाहते हो। तभी दीपा बोली बाबूजी उनको फोन आप ही कर देते तो । अरे हा बेटी देख मै भी कैसा पागल हू अभी करता हू अरे मै तो इन बातो को जैसे भूल ही गया।

बाबूजी फोन करने लगे शायद अखिल ने हा भर दी थी तभी खुश थे उनके सो जाने पर दीपा रसोई में चली गई देखू तो क्या सामान है क्या नहीं ? वे आ रहे है तो ।

उसने देखा सभी सामान बाहर इतना नपा तुला पड़ा था कि उसे अपनी भाभी की बुद्धि पर तरस आया साथ ही दु ख भी बहुत हुआ क्या मै खा जाती ? मैने क्या कभी देखा नहीं मेरे अपने ही घर में जहा मैने

जनम लिया, मेरे साथ ऐसा बर्ताव ? दीपा का मन करैला हो गया, मै तो यहा रहना ही नहीं चाहती थी पर भैया का फोन आया कि हम पाच छह रोज के लिये कलकत्ता नीलू की बहन की शादी मे जा रहे है, तुम यहा आ जाना पिताजी के उनकी बात भी पूरी नहीं हो पाई थी कि मैने ही उत्साह से हा कर दी थी बाबूजी के साथ रहने और ढेर सारी बाते करने की उमग से कुछ सोच भी नहीं पाई।

उसने सोचा बाबूजी दो घण्टे पहले जागने वाले नहीं, अत जरूरी सामान की सूची बनाई और बाजार चल दी, वह नहीं चाहती कि बाबूजी को इस बात का पता भी चले, बेकार ही दु खी होंगे, और ये भी नहीं चाहती कि अखिल के सामने कोई फजीहत हो। पाच छह दिन तो पख लगा कर उड़ गये थे बच्चों और अखिल को स्कूल व ऑफिस भेज बाबूजी के साथ ढेरों बातें करती, माना फिर से बचपन लौट आया हो।

दीपा भारी मन से आज अपने घर लौटी तो मन ही नहीं लगा, पिता की विवशता ने उसे तोड़ दिया था, सोचने लगी बाबूजी कितने बेबस और लाचार हो गये हैं। शारीरिक तौर पर वे आज भी चुस्त है लेकिन मानसिक तौर पर कितना टूट चुके है आश्चर्य है कि एक रोब दाब वाला व्यक्ति बुढ़ापे में अपने बेटे बहू के सामने इतना कमजोर क्यू पड़ जाता है? बिना जीवन साथी के कितना अकेला हो जाता है। किसी को भी फुर्सत नहीं रहती कि दो पल बैठकर उनका दु ख दर्द सुने। बड़े तो बड़े पर बच्चे भी अब दादा-दादी से ज्यादा टी वी से चिपके रहना अधिक पसन्द करते है।

आज दीपा को बाबूजी के यहा से आये पूरा हफ्ता बीत गया था। दोपहर को काम निबटा, मिलने चली गई, देखा बाबूजी कपड़े धोने बैठे थे दीपा चकित रह गई बाबूजी आप लाइये मै धो देती हू उसके कहने पर वे चुपचाप उठ गये थे, दीपा को रोना आ गया बेचारे बाबूजी, माँ के सामने कभी एक बनियान तक नहीं धोई याद आया उसे मा कभी-कभी डाटती आप अपने कपड़े खुद नहीं धो सकते तो बाबूजी हस कर कहते दीपा की मा बस ही काम मुझसे नहीं होता, कहो तो खाना बना दू इस

को भी हसी आ जाती।

कपड़े सुखा कर जब दीपा छत की सीढ़िया उतर रही थी तो भाभी ने आवाज लगाई बिना किसी भूमिका के बोली तुम्हें क्या जरूरत थी कपड़े धोने की ? ऐसा करके तुम मुझे नीचा दिखाना चाहती हो बात न बढ़े इस डरसे दीपा हसती हुई बोली नहीं भाभी ऐसी बात नहीं है फिर मैने धो भी दिये तो क्या फर्क पड़ता है। बिफर उठी नीलू क्या फरक पड़ेगा ? अच्छा है तुम अपना घर देखो, मेरे काम में दखल देने की जरूरत नहीं। दीपा डरती-डरती बोली नहीं भाभी वो क्या है कि बाबूजी को ये अच्छा नहीं लगता उन्होंनें कभी धोये भी नहीं। कभी नहीं धोये तो अब धो देंगे तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ेगा, अच्छे खासे है, अच्छा खाते हैं मुझे ये चोंचले पसन्द नहीं।

अब तो दीपा की सहन शक्ति जवाब दे गई वह बोली आपको मेरा कपड़े धोना पसन्द नहीं तो खुद क्यों नहीं धोती, भैया और बच्चों के भी तो धोती है। इतना कहना था कि जैसे तूफान आ गया फिर तो नीलू ने वो सब कहा जो कोई बेटी नहीं सुन सकती। यहा तक कि पिता को बरगलाने और उनकी सम्पत्ति पर नजर रखने की तोहमत तक लगा दी।

तेज स्वर सुन बाबूजी बाहर आ गये थे, दीपा का तमतमाया चेहरा देख कलेजा काँप गया बोले क क्या हुआ बेटी ? दीपा जहर का घूट पी गई। कुछ नहीं बाबूजी बस यू ही उन्हें समझते देर नहीं लगी जरूर नीलू ने कुछ उल्टा सीधा कहा होगा। उन्हें दीपा पर तरस आने लगा बेचारी बिन माँ की बच्ची मेरी खातिर सब सह रही है ये भी खून का घूट पीकर रह गये थे। नीलू देर तक बड़बड़ाती रही थी दीपा जाने लगी तो बाबूजी की आँखे भीग गई।

आज दीपा को माँ की बहुत याद आई बिलख उठी थी वह मन ही मन बोली किसी ने सच ही कहा है कि ' माँ बिना पीहर नहीं और सास बिना ससुराल वह किसे अपना दर्द

वताये । दीपा दिन रात बाबूजी की चिन्ता में घुलती उदास सी रहने लगी। एक दिन सुबह-सुवह फोन आया जैसे ही उठाया तो बाबूजी की आवाज सुन खुशी के आँसू आ गये बाबूजी

हाँ बेटा तू तो वापस मिलने ही नहीं आई भला अपने बाप को भी कोई इस तरह भूल जाता है क्या? गला रूध गया था, नहीं नहीं बाबूजी ऐसी बात नहीं है वह कुछ सोचती कि उधर से आवाज आई उन्होने एक पता नोट करवाया और उसी पर आकर मिलने को कहा दीपा ने सोचा बाबूजी कुछ कहना चाहते होंगे वह तो बाबूजी से मिलने को बेताब थी घण्टे भर में ही पहुच गई

वहा जाकर देखा तो एक साथ दो आश्चर्य एक तो बाबूजी ने अलग किराये का मकान ले लिया था, दूसरा जमुना काकी भी वहाँ थी जो उसकी मा की खास सहेली रह चुकी थी। एक पल को वह सुखद आश्चर्य में डूब गई अच्छा हुआ बाबूजी अब उस घुटन भरी जिन्दगी से दूर रहेंगे दूसरे ही पल घबरा गई नहीं कुछ और सोचती कि बाबूजी ने ही खुलासा कर दिया बेटा पानी सिर से ऊपर गुजर गया तभी मुझे ये फैसला करना पड़ा कहना तो नहीं चाहिये परन्तु नीलू ने मेरे साथ जैसा बर्ताव किया अच्छा नहीं किया दीपा को जिज्ञासा हुई बाबूजी आपने तो कभी मुझे कुछ नहीं बताया । अब क्या बताता बेटी तुझे दु खी नहीं करना चाहता उसकी हरकतों से अशोक भी परेशान था वह कुछ कहने जाता तो वह उस पर भी बरसने लगती। घर की शान्ति भग न हो इसलिये अशोक को भी मै समझाकर चुप रखता ।

दीपा अवाक् थी तो भैया भैया भी ये सब जानते है और मै न जाने क्या-क्या सोच रही थी भैया के बारे मे। दीपा को यह जान कर सुकून मिला कि भैया बाबूजी के दु ख से अनजान नहीं है, ये बात और है कि वे विवश हैं। अजीब बात है ये खून का रिश्ता भी कैसा बनाया सभी एक दूसरे के सुख की खातिर सह रहे थे और चुप थे।

अब दीपा को जमुना काकी की बात जानने की उत्सुकता थी बाबूजी खुद ही बोलने लगे देख बेटी भाग्य की विडम्बना मैने

विवश होकर वेटे का घर छोड़ा और इस वेचारी को   वेटे वहू ने घर से निकाल दिया   यह तो ठीक हुआ सही जगह आ गई   वरना   वरना क्या   ? दीपा वोली वरना ये तो पहुच चुकी होती तुम्हारी मा के पास उसने देखा जमुना की आँखे बरसने लगी थी, दीपा ने उन्हें चुप कराया। तभी वावूजी पुन वोले   ये तो ठीक हुआ कि कल रात   जगह वदलने की वजह से मै सो नहीं पाया और   रोने की आवाज से वाहर चला आया तो देखता हू   कोई शीशी इसके हाथ में थी जिसे पी कर यह अपनी जीवन लीला समाप्त करने वाली थी कि मै पहुच गया   वत्ती जलाई तो मैं खुद हैरान था।

वात चल ही रही थी कि   भैया आ गये   देखते ही दीपा खुशी से चहक उठी आज उसे अपने भैया का एक नया रूप दिखाई दिया था। दीपा को यह जान कर आश्चर्य हुआ कि वावूजी को अलग रखने में उन्होंने पुरी मदद की थी परन्तु नीलू भाभी को इस वात का पता नहीं था   भैया तो वावूजी को अलग करने के पक्ष में नहीं थे पर वावूजी ने ही समझा वुझा कर तैयार किया था ओर वादा किया था कि सव कुछ ठीक होने पर लौट आएँगे।

परन्तु अव समस्या यह थी कि जमुना काकी क्या करें? वह बोझ वन कर रहना नहीं चाहती और उस पर यह भी कि लोग क्या कहेंगे ? दूसरा उन्हें भाग्य भरोसे भी नहीं छोड़ा जा सकता कहीं कुछ कर न वैठे   वे हर अच्छे वुरे समय में मा के वहुत काम आई थी विल्कुल एक परिवार के सदस्य की तरह   तो अव उन्हें ऐसी स्थिति मे छोड़ा भी तो नहीं जो सकता था। तीन चार घण्टे की मन्त्रणा के वाद   भैया और दीपा ने एक रास्ता निकाला   दोनों का विवाह   पर क्या   वावूजी तैयार होगे   ? डरते-डरते जव उन्होने अपना फैसला वावूजी को सुनाया तो एक वारगी जैसे विच्छू ने डक मारा हो ऐसे उछले थे किन्तु जव उन्हें जमुना काकी की सेवाओं का वास्ता दिया   तो वे कुछ पिघले   पर कुछ सवाल उन्हें परेशान कर रहे थे   लोग क्या कहेंगें ?   इस उम्र मे

विवाह लोग कहेंगे मत मारी गई है। बेटे बेटी के सामने शर्मिन्दगी झेलनी पड़ेगी पर अशोक और दीपा तो जैसे तैयार बैठे थे हर सवाल का जवाब था उनके पास पास वे बोले आप और जमुना काकी जिस परिस्थिति में रह रहे हो, कौन लोग आ रहे है आपकी मदद को इस एक ही जवाब से वे चुप हो गये थे चुप रहने के अलावा चारा ही क्या था, सोचने लगे उन्हें एक साथी मिल जायेगा, जमुना को एक सम्मानित दरजा और सबसे बड़ा सुकून जो बुढ़ापे में एक अति आवश्यक सजीवनी है वे जानते थे बिना इसके जमुना जैसी स्वाभिमानी औरत उनके घर रह नहीं पायेगी और नहीं रहेगी तो जायेगी कहा ?

दूसरे दिन अखबार पढ़ते समय जैसे ही नीलू ने पृष्ठ पलटा तो कार्यालय विवाह अधिकारी जिला मजिस्ट्रेट की लोक सूचना पर नजर ठहर गई। नाम उम्र मोहल्ला पढ़कर तो वह चकरा गई, उसे लगा जैसे सब कुछ घूम रहा हो हाथ पाव सुन्न पड़ने लगे हे भगवान ये क्या कहेंगे? पर उसे अपने ही प्रश्न खोखले लगने लगे थे। मन में तो वह अपने किये पर शर्मिन्दा थी और अपने आप को ही कोसने लगी।

पिघलता दर्द

प्रियल खुशी से दौड़ती हुई सपना के घर गई। खुशी और भय के मिले जुले भाव उसके चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। सपना उसके चेहरे को देख कर बोली क्या बात है प्रियल आज तो तुम बड़ी खुश दिखाई दे रही हो ? काप उठी वह, उसे लगा जैसे किसी ने उसे चोरी करते रगे हाथों पकड़ लिया हो नहीं दीदी, ऐसी तो कोई बात नहीं है। फिर कुछ सकुचाती सी बोली दीदी आपसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं ?

प्रियल का मुह लाज से लाल हो गया दीदी वो मै। अरे! ये क्या मै वो लगा रखी है कह ना क्या बात है? कुछ हिम्मत जुटा कर बोली, दीदी मै एक लड़के से प्यार करती हू ओर उससे । आगे वह नहीं बोल पायी क्या अवाक् रह गई थी सपना। प्यार और शादी के नाम से ही असहज हो उठी थी वह। उसके अन्त करण में हलचल मच गयी। बहुत मुश्किल से अपने को सयत कर प्रियल के मन की थाह पाने को उसने पूछा हा हा बोल कौन है वो क्या करता है दिखने में कैसा है उसके माता पिता भी चाहते हैं या नहीं। एक साथ इतने सारे सवालों से बौखला उठी थी प्रियल।

सपना को समझते देर न लगी कि वह उस लड़के के साथ घर से भाग कर विवाह करना चाहती है। एक टीस सी उठी पर उससे सच उगलवाने के लिये प्यार से उसके कन्धे पर हाथ रखती हुई बोली, हा बोल ना सपना के स्नेह से प्रियल को राहत मिली अब वह थोड़ा आश्वस्त होकर कहने लगी । दीदी उसका नाम निहाल है यह मेरे साथ ही कॉलेज में पढ़ता है हम एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते हैं। अत आप ही बताइये हम क्या ?

अच्छा तो बात यहा तक बढ़ गई है सपना का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा था। उसे आश्चर्य हुआ कि उसकी स्थिति ऐसी क्यू हो रही है ? उसे लगा जैसे उसके साथ घटित उन क्षणों की पुनरावृत्ति होने जा

रही है। अपने मन के भावों को छिपा, बड़ी चतुराई से प्रियल से सारी बाते खुलवा ली। प्रियल भी सपना के प्रोत्साहन से एक-एक योजना खोलती चली गई, यहा तक कि मम्मी के गहने ओर पापा के जी पी एफ लॉन के आये पैसों को ले जाने वाली बात भी उसने बता दी।

सपना ने सीधा प्रश्न किया अच्छा प्रियल कब जाना है?दीदी दो दिन बाद पापा मम्मी किसी काम से बाहर जा रहे है, तब मै घर में अकेली रहूगी। नेहल व शिवम् स्कूल होंगे। सपना को उसके साहस पर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ होता भी कैसे क्योंकि ये ही सब तो वह स्वय कर चुकी है। अचानक सपना ने पूछा अच्छा प्रियल ये बता तुझे निहाल पर पूरा भरोसा है, क्या तू उसके साथ खुश रह सकेगी? प्रियल चहकी थी हा दीदी मुझे पूरा विश्वास है, वह मुझे बेहद चाहता है, और मै भी उसको कहकर लजा गई थी वह।

अब सपना को पूरा यकीन हो गया कि ये लड़की रूकने वाली नहीं है। सोचने लगी इसे रोकू पर कैसे नहीं, मुझे क्या पड़ी है ? मैं क्यों उसकी बाधक बनू। तभी उसका मन हाहाकार कर उठा सपना रोक ले इसे उसे एक और सपना मत बनने दे, रोक ले, रोक ले। सपना जैसे नींद से जागी नहीं नहीं मैं इसे रोकूगी इसका जीवन बर्बाद नहीं होने दूगी।

अच्छा प्रियल ये बता, तूने मुझे ये सब क्यू बताया क्या तुझे ऐसा नहीं लगा कि मै ये सब तुम्हारी मम्मी को बता दूगी या कोई रूकावट पैदा कर दूगी। लापरवाही से हसी प्रियल अरे दीदी आप कैसे रूकावट डालती, आप तो आपने भी तो प्रेम विवाह किया है आप ही तो मेरी समस्या का हल कर सकती हो तभी तो मै आपके पास आई।

जैसे कुछ कचोट गया सपना तिलमिला उठी। तभी प्रियल का स्वर उभरा दीदी आप कितनी खुशनसीब है आपने अपनी पसन्द से विवाह किया दीदी आपको खुश देख कर ही तो मेरा साहस बढ़ा अब सपना की सहनशक्ति चुक गई थी तड़प उठी वह तीन वर्षो से दबा ज्वालामुखी सैलाब बन बहने लगा प्रियल चकरा गई अरे दीदी

आप क्यो रोने लगी ? उसे समझ नहीं आया उसने ऐसा क्या कह दिया ?

सपना भाव विह्वल हो प्रियल का हाथ थाम कहने लगी ऐसी गलती कभी मत करना मेरी वहना, मै तुझे एक और सपना नहीं वनने दूगी नहीं प्रियल जो मैने झेला है उसकी छाया भी तुम पर नहीं पड़ने दूगी। प्रियल अवाक् रह गयी ये क्या माजरा है? साहस जुटाकर बोली दीदी आपने भी तो आगे के शब्द सपना नहीं सुन पाई। हा प्रियल तू कहेगी मैने भी प्रेम विवाह किया है, तू पूछेगी मै इतनी खुश रहती हू, यह भी सच है पर आज मै तुझे राख के नीचे दवे दहकते अगारे दिखाती हू। तुझे क्या पता इस वनावटी मुस्कान के पीछे कितना दर्द है। तू नहीं जान पायेगी मेरी वहन।

प्रियल का भ्रम टूट कर विखरने लगा था सपना दीदी की जो तस्वीर उसने वनाई थी वह तो विल्कुल ही विपरीत निकली। अव उसे अपनी सपना दीदी की सच्चाई जानने की उत्सुकता थी। सपना को भी एक ऐसे ही साथी की तलाश थी जो उसका दर्द वाट सके जिसे वह अपनी व्यथा कहकर दिल का वोझ हल्का कर सके। आज वह मौका मिल गया था जिसे सपना खोना नहीं चाहती थी । उसका दर्द पिघलकर शब्दो मे ढलकर वाहर निकलने को वेताव था।

प्रियल जानती हो जो गलती आज तुम करने जा रही हो वही मैने तीन वर्ष पूर्व की है ये तीन वर्ष मैने ऐसे विताये जैसे तीन युग। मैंने अपने मा वाप का विश्वास तोड़ा? उनके अरमानों का खून किया उनकी जीवन भर की कमाई इज्जत के चीथड़े किये है मैने अपने भाई-वहन के भविष्य पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया मैने अपने स्वाभिमानी पापा का सिर शर्म से झुका दिया मै अपने आपको कभी माफ नहीं कर पाऊगी उन सव की आह ने मेरे जीवन को भी ग्रहण लगा दिया भला दूसरों को दु'ख देकर कभी कोई सुखी रह पाया है ?

प्रियल की आँखें आश्चर्य से फटी जा रही थी ऐसी कड़वी सच्चाई उसे तो कल्पना में भी ऐसा विचार न आया। वह तो अपने ही

रगीन सपनों में डूबती रही थी। तभी सपना का स्वर उभरा, लगा जैसे बहुत दूर से आ रहा हो, प्रियल मैने रिश्तों की तो दुनियाँ ही उजाड़ दी अपने ही हाथों अपनी जड़ें खोद डाली, भला बिना जड़ों के कोई कितने दिन जीवित रह सकता है, मैं तो एक जिन्दा लाश बन कर रह गई हू।

आज मेरे मा बाप है, पर मै अनाथ हू। भाई बहन है, पर उन्हें अपना नहीं कह सकती सास, श्वसुर देवर, ननद के रिश्तों का सुख जाना ही नहीं, रिश्तों की मिठास तो न जाने कहा खो गई ? प्रियल दुल्हन बनना हर लड़की का ख्वाब होता है, मै भी दुल्हन बनी पर कैसी ? न साज श्रृगार, न शहनाई का स्वर, न फेरे, न विदाई न सहेलियों की मीठी छेड़छाड़, न देवर ननद का आगे पीछे घूमना, भाभी और बहू जैसे सम्बोधन सब कुछ छूट गया। सिसकिया फूट पड़ी थी उसकी।

प्रियल का कलेजा काप गया, ऐसी नगी सच्चाई पहली बार उसे रिश्ते के समीकरण समझ आने लगे। वह तो जड़वत सुनती ही जा रही थी, उसे लग रहा था सपना दीदी बोलती ही रहे, उसे लग रहा था जैसे वह कोई फिल्म देख रही हो सपना की बात से प्रियल की तन्द्रा टूटी। प्रियल रिश्तों का सफर यहीं तक खत्म होता तो भी सह लेती पर मेरे होने वाले बच्चों को क्या कहूँगी ? यही कि बेटे मैंने तुम्हारे रिश्तों को जड़ से ही काट दिया है। मैने तो बीस बरस तक इन रिश्तों की उष्णता को महसूस किया पर वे तो इन्हें जानेंगे ही नहीं, मेरी गलती की सजा तो उन्हें ही मिलेगी ना, प्रियल को लगा जैसे किसी ने तेज हथोड़े से चोट की हो। अब उसे रिश्तों का मूल्य समझ में आने लगा था।

पता है प्रियल कल सामने वाली विभाजी के बहू की गोद भराई रस्म थी, मै भी गई थी वहा सच विभाजी बहू के क्या लाड़ लड़ा रही थी कैसी सुन्दर मेहन्दी लगाई उसे देखकर वो तो निहाल हुई जा रही थी मुझे तो बहू के भाग्य से ही ईर्ष्या होने लगी थी सच मानना उन दोनों का प्यार तो मेरे नश्तर चुभ गया। तू अपनी इस दीदी को खुशनसीब समझती है न ले देख शायद मुझ जैसी बदनसीब भी कोई न होगी। पता है परसों मेरी बहन का विवाह है कहते-कहते वह

सपनों में खोने लगी कैसा अच्छा लग रहा होगा घर मेहमानो से भरा होगा कितनी चहल पहल होगी गाना वजाना नाचना मम्मी पापा भी कितने व्यस्त होगे काश मै भी ?

सपना और न जाने क्या क्या बड़बड़ाती कि प्रियल ने उसको यथार्थ में लाकर खड़ा कर दिया, दीदी आप इतनी दु खी क्यों होती हो? आपके पास अपनी पसन्द व प्यार करने वाला पति तो है और आप तो जानती है कुछ पाने के लिये कुछ खोना पड़ता है। हाँ एक लम्वी श्वास ली उसने हा है तो पर इसके लिये कितना कुछ खोया है मैने शायद पाने से ज्यादा खोया है।

वो तो एक जुनून था जो समय के साथ खत्म हो गया है। अव सोचती हू मैने ऐसा पागलपन क्यों किया? हा पागलपन ही तो था जो एक अदद प्रेमी के लिये जिससे कुछ समय का परिचय हुआ था उस थोड़ी सी पहचान ओर परिचय को प्यार का नाम देकर अपने मा वाप जिन्होंने जन्म दिया पाला पोसा उन्हें छोड़ आई क्या यही फर्ज था मेरा?

सच प्रियल अव तो मुझे इन फिल्मो पर गुस्सा आता है जो लव स्टोरियों के नाम से प्यार को वढ़ा चढ़ाकर प्यार की जीत वताते है सत्यानाश हो उनका, इन्हीं फिल्मों का तो असर है हम पर जो उन हीरो, हिरोइनों को अपना आदर्श मान वैठे है जो कि यथार्थ की धरती पर कहीं नहीं टिकती।

प्रियल मै तुझे एक वात ओर वताऊगी, शायद किसी को कभी नहीं वताती या वताना भी नहीं चाहिये पर तुझे अवश्य वताऊगी। जानना चाहेगी कि जिस पति की खातिर इतना सव कुछ छोड़ा वो किस तरह अपना रग वदलने लगा है हा तुझे आश्चर्य होगा। जो मेरे प्यार का दम भरते थे वे भी अव हर वात पर उलझ पड़ते है वात-वात पर ताने देते है। अव उनकी नजर में मै भी गुनहगार हू, [illegible] हू, आपके कहने पर किया तो हाथ उठाने को तैया[illegible] गलती स्वीकार करना नहीं चाहते। कभी-कभी तो

जी करता है, परन्तु एक गलती कर चुकी अब नहीं करुँगी, फिर उस अजन्में बालक का क्या दोष है ? समाज से मिली उपेक्षा का उनका सारा आक्रोश मुझ पर उतरता है। कहते है सब तेरे कारण हुआ, मेरी जिन्दगी बरबाद कर दी समाज में इज्जत नहीं रही, दोस्त मजाक उड़ाते है, पिता की सम्पत्ति से बेदखल हुआ। ये सभी मेरा ही दोष मानते है। और अब तो ये भी कहने लगे कि मुझसे भी अच्छी लड़की उन्हें मिल सकती थी ओर साथ ही ढेर सा दहेज भी। मेरी सारी अच्छाइयों में कमिया नजर आने लगी है। हर वक्त बौखलाये रहते है। क्या-क्या बताऊ हर पल तिल-तिल कर जलती हू, किसी से शिकायत भी तो नहीं कर सकती, करू भी तो किससे ?

पड़ौसी भी मेरी सच्चाई जानने के बाद ज्यादा सम्बन्ध नहीं बढ़ाते मेरी छाया भी अपनी बेटियों पर नहीं पड़ने देते, एक तुम हो जो मेरे यहा आती हो। प्रियल कुछ बोलने लगी कि चुप रह गई वह कहने वाली थी कि मेरी माँ भी यहा आने को मना करती हैं, मै भी छिपकर आती हू। परन्तु यह कर कर वह उसका दर्द बढ़ाना नहीं चाहती थी।

प्रियल मैंने यह तो जान लिया है, "घर से भागी लड़की का कोई अपना नहीं बन सकता" उसे हर तरफ से उपेक्षा ही मिलती है। उसे कुछ याद आया तूने आज का अखबार पढ़ा, सपना अखबार की खबर पढ़ाने लगी" प्रेमी के साथ फरार प्रेमिका को प्रेमी ने कोठे पर बेचा"। भय से काप उठी थी प्रियल उसकी चीख निकलते-निकलते बची सपना की गोद में सिर रख कर फफक-फफक कर रो पड़ी बस दीदी अब कुछ कहने की जरूरत नहीं दीदी आपने तो मुझे भयकर नर्क की यातना से बचा लिया है। मेरी बेलगाम उड़ान को आपने एक ठहराव दे दिया है। वरना मै कहीं की नहीं रहती ।

उड़ता पत्ता थम गया

रत्ना ने अपनी बहू नेहा को समझाना चाहा, देख ! बहू को सुबह देर तक सोना शोभा नहीं देता तू कल से थोड़ा जल्दी उठ जाना इतना सुनना था कि नेहा क्रोध से बोली, मुझसे नहीं होगा ये सब, मै नहीं उठ सकती। और फिर क्या करना, खाना तो मैं समय पर बना ही लेती हू।

बेचारी रत्ना सकपका गई माहौल बिगड़ न जाए इस भय से थोड़ा नम्र होकर बोली, मेरे कहने का मतलब है थोड़ा जल्दी उठ जाती तो नहा धोकर फिर रसोई का काम करती। तेरे बाबूजी को बिना नहाए खाना बनाना पसन्द नहीं। मैं भी इतने वर्षों से नहाकर ही रसोई का काम करती आयी हू । बिफर उठी नेहा करती रही होगी आप, मुझसे ये चोचले नहीं होंगे, ओर किसे क्या पसन्द है क्या नहीं? मेरी मरजी होगी वो ही करूगी।

रत्ना बहू के जवाब से दग रह गई वह तो कई दिनों से यह बात कहना चाह रही थी, किन्तु कहने का साहस नहीं जुटा पाई थी। याद आया उसे वो दिन जब रूपेश का जन्म हुआ, कितना खुश थी वह पुत्र को पाकर। उसको पालने में कोई कसर नहीं रखी थी अपनी एक-एक खुशी कुर्बान कर दी थी उस पर। विवाह योग्य हुआ तो सपनों के ताने-बाने बुनने लगी थी।

ऐसी बहू लाऊँगी कि लोग देखते रह जायेगे परी-सी सुन्दर कि घर जगमगा उठेगा। बेटे के ब्याह का अतिरिक्त उत्साह था उसमे। कभी-कभी पति छेड़ते तुम तो पगला गई हो ऐसी क्या बहू तुम्हारे ही आ रही है? कैसी तुनक उठती थी वह वाह जी तुम क्या जानो बहू लाने का ओर सास बनने का मजा? विवाह हुआ चाँद-सी बहू आई बधाइयाँ बाँटने में तो रत्ना ने दिल खोल दिया था कई दिनों तक उस विवाह की चर्चा लोगो में होती रही थी। रत्ना के तो मानो पाँव ही जमीन पर नहीं पड़ते थे पर ये खुशी पानी के बुलबुले सी साबित हुई थी।

आज मौसम में कुछ ज्यादा ही ठण्डक थी, रत्ना बोली बहू ! आज उड़द की दाल और मक्की के ढोकले बनाना। बहुत ही मन कर रहा है, तेरे ससुर जी को भी बहुत पसन्द है। जब भी ऐसा मौसम होता है वे ये ही बनवाते है। रत्ना की बात पूरी भी नहीं हुई कि नेहा नाक सिकोड़कर बोली, क्या गवारों जैसा खाना पसन्द है, मुझे तो पसन्द नहीं, आज तो मैं इडली बना रही हूँ।

मन मसोस कर रह गई थी रत्ना, उसे लगा जैसे अपने ही घर में पराई हो गई हो, उसकी इच्छा अनिच्छा का तो कोई महत्त्व ही नहीं रह गया था और जब वह खाना बनाती है तो रुपेश के बाबूजी नाराज होते है, तुम्हीं सब करती रहोगी तो यह क्या करेगी ? फिर न कहना कि हाथ पाँव दर्द कर रहे है या कमर दर्द कर रही। इस डर से वह थोड़ी बहुत खाने में मदद कर देती थी।

वैसे भी नेहा को उसका रसोई में साथ काम करना कहाँ भाता था मुँह चढाए रखती, अपने ही तौर-तरीके से काम करती। कुछ भी बोलने पर कहती, मुझे भी आता है आप अपना काम करिए। आज उसे वह कहावत याद आ रही है जो उसकी सास हमेशा कहती थी ' खाले - खाले बहूरी आई, पहन ले पहन ले बेटी आई'' अर्थात- बहू के आने से पहले मनचाहा खाले और बेटी के बराबरी में आने से पहले मन भाता पहन ले। आज उसे कहावत की सार्थकता समझ में आई। आखिर बड़े-बूढ़ों ने जो कहा है कुछ सोच समझ कर ही कहा है।

नेहा का व्यवहार देख रत्ना मन ही मन कुढ़ती पर किसे कहे सुबह देर से उठना, फिर चाय लेकर कमरे में जाती तो नौ बजे पहले कमरे से बाहर नहीं आती ओर आती तो रसोई में खटर-पटर करती बड़बड़ाती जैसे-तैसे खाना बनाकर रख देती, जैसे किसी तरह पेट भरना हो, स्वाद का, इच्छा-अनिच्छा का कोई खयाल नहीं।

ऐसा देख रत्ना जलती कुढ़ती पर कुछ कहने से डरती कहीं बात का बतगड़ न बन जाए पास ही देवरानी व जेठानी भी रहती उनको थोड़ी भी किसी बात की भनक लग जाती तो एक के चार जोड़ती अत

चुप रहने में ही रत्ना अपनी भलाई समझती एक दो बार जेठानी ने रत्ना के मन की थाह लेनी भी चाही पर वह सतर्क थी, घर की बात घर में ही रखना चाहती थी।

एक दिन तो देवरानी ने रत्ना को उकसा ही दिया। क्या भाभी सारा दिन काम करती रहती हो, अब तो बहू आ गई है और फिर तुम्हारी तबियत भी ठीक नहीं रहती, एक बार तो हँस कर टाल गई रत्ना। अरे छोटी ! काम ही कितना है और अभी नेहा भी बच्ची है, उसके भी खाने पहनने के दिन है एक आध बच्चा हुआ नहीं कि जिम्मेदारी बढ़ जायेगी तो करेगी ही सब।

देवरानी मुँह बिचकाकर बोली भाभी तुम भी बस, एक बात जान लो बहू को *ज्यादा सर पे बिठाना ठीक नहीं, बहू को बहू बनाकर ही* रखो उसे बेटी बनाना अच्छा नहीं है। यह बात रत्ना को लग गई रात भर बैचेनी से काटी अब वह मौका तलाशने लगी कब बहू को कुछ कहा जा सके।

सुबह जैसे ही नेहा रसोई में आई तो भड़क उठी थी रत्ना, अब मुझसे ये सब नहीं होता मै कोई घर की नौकरानी हू जो खटती रहूँ। सुबह जल्दी उठना पानी, सफाई चौका बर्तन अब और नहीं कर सकती एक कप चाय बनाकर देने वाला कोई नहीं। वह कुछ और कहती जितने नेहा भी बिना चाय बनाए पलटकर आवेश में कमरे में भागी। रत्ना को लगा आज नेहा पर अच्छी चोट की है पर मन में डर भी रही थी कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिये क्यूँ वो अपनी देवरानी के बहकावे में आ गई।

तभी रूपेश तमतमाया चेहरा लिऐ माँ के सामने आ खड़ा हुआ। माँ आखिर तुम चाहती क्या हो? रोज मुँह फुलाये रहती हो और काम काम कितना काम है ? खाना तो नेहा बनाती ही है तुम पर कौन सा काम का पहाड़ टूट पड़ा है। तुमसे काम नहीं होता तो मत करो कर लेगी ये। तुम करती ही क्या हो ? मुझे ये सब नाटक पसन्द नहीं।

देखती रह गई थी रत्ना उसका अपना बेटा ये सब कह रहा है।

आज तक जो कभी ऊची आवाज मे अपनी माँ के सामने एक शब्द नहीं बोला वो इतना कुछ कह गया रो पड़ी थी वह।

मन तो हुआ चीख-चीख कर कहे अरे बेटा मै क्या करती हूँ, ये तू पूछ रहा है जो माँ को थोड़ा ज्यादा काम करते देख दु:खी होता था। अरे, तू उठता है तव तक मेरी पाँच घण्टे की दिनचर्या समाप्त हो जाती है, पूरा घर चमकता नजर आता, जो शायद तुझे दिखाई नहीं देता कितनी सरलता से कह दिया, तुम क्या करती हो? रहने दो नेहा कर लेगी, क्या खाक कर लेगी? महारानी दिन चढ़े उठती है, चाय पीने में ही नौ दस बजते है क्या इतनी देर तक घर को बासी पड़ा रहने दू और पानी उसका क्या जो पाँच बजे आकर छह बजे चला जाता है। एक दिन काम नहीं करूँगी तो छटी का दूध याद आ जाएगा।

तीन दिन निकल गये थे नेहा ओर रत्ना को बात किये शाम को रूपेश के कमरे से आती तेज आवाजो ने रत्ना के कदम रोक लिये शायद मेरी ही बात हो। नेहा की आवाज थी अब मै एक पल भी यहाँ नही रह सकती तुमने मुझे धोखा दिया है, क्या अधिकार था मेरे जीवन से खिलवाड़ करने का?

अच्छा होता किसी गाँव के गवार से ही ब्याहती ये सब तो नहीं देखना पड़ता। रत्ना का कलेजा मुह को आ गया शायद ये मेरे ही कारण हुआ आगे और सुनने की उत्सुकता वह रोक न पाई और वहीं ओट मे खड़ी हो गई।

रूपेश का स्वर उभरा ज्यादा चू चपड़ करने की जरूरत नहीं है यहाँ रहना है तो चुपचाप रह जैसा मै चाहू। रत्ना को लगा बेटे को अक्ल आई है, तभी बहू को डाँट रहा है।

और हाँ वो गवार से ब्याह की इच्छा भी मन में मत रखना इच्छा पूरी कर लेना, मेरे जो जी मे आयेगा वो करूँगा चुपचाप रह वरना ? बिफर उठी थी नेहा क्या कर लोगे? बताऊ क्या करूगा और इसी के साथ तड़ातड़ झापट नेहा पर बरस गए। रत्ना को लगा ये तो मामला कुछ और है।

बिलख उठी थी नेहा अपने पति का ऐसा घिनौना रूप देखकर। उसने सपने मे भी नहीं सोचा था कि इतना पढ़ा-लिखा, उच्च पद पर कार्य करने वाला, सभ्य दिखने वाला ऐसी नीच हरकत भी कर सकता है। रूपेश बड़बड़ाता चला गया था, नेहा पलग पर गिर फूट-फूट कर रोने लगी। उसे अपनी दुनिया उजड़ती सी लगी। काश किसी गरीब साधारण व्यक्ति से ही ब्याहती तो अच्छा होता।

कन्धे पर किसी का स्नेह भरा स्पर्श पाकर नेहा चौकी। देखा सामने माँजी खड़ी है, वह हड़बड़ा गयी, जैसे चोरी करती हुई पकड़ी गई हो शर्मिन्दगी सी महसूस हुई तीन दिन से मै माँजी से बात नहीं कर रही और ये मेरे रोने पर कैसी मेरे पास चली आई। आँखें छलक आई थी उनका स्नेह देख कर।

रत्ना उसके सिर पर हाथ फिराती बोली क्या हुआ बेटी क्यूँ रो रही हो ? वह अपनी पीड़ा छिपाने का असफल प्रयास करने लगी किन्तु छिपा न सकी। रत्ना बोली देख बेटी मुझे ही नहीं बतायेगी तो किसे बतायेगी ? आखिर मै भी तो तेरी कुछ लगती हूँ । ऐसे स्नेहाभिसिक्त शब्द सुनकर नेहा पिघल गई। रत्ना उसके लिए पानी लाने चली गई।

अब नेहा के सोचने की बारी थी क्या माँजी को बताना उचित होगा ? नहीं-नहीं । यदि इन्हें नही बताऊँगी तो किसे कहूँगी? कहते है औरत के सुख-दु ख का साथी पति होता है किन्तु पति ही दु ख पहुँचाये तो वह किससे शिकायत करे? उसने माँजी को बताने का दृढ निश्चय कर लिया।

रत्ना पानी देती हुई बोली ले बेटी पी ले फिर बता क्या बात है? नेहा ने पानी पिया कुछ राहत मिली माँ जी क्या बोलूँ, कहाँ से शुरु करूँ कैसे कहूँ कुछ समझ नहीं आता ?

थोड़ी चुप्पी के बाद फिर बोली आपका बेटा किसी दूसरी औरत के चक्कर मे है । ये सुनकर भी रत्ना के चेहरे पर कोई भाव नहीं आए वह चुपचाप सुनती रही। कुछ लोगो से सुना लेकिन

बात गले नहीं उतरी थी मन मानने को तैयार न था परन्तु आज बाजार गई तो अपनी आँखों से दोनो को पिक्चर हॉल से निकलते व होटल मे जाते देखा। देर से आने का कारण पूछा तो झूठ बोल गए। ऑफिस में मिटिंग थी, और मेरे बोलने पर ये सब हो गया, मै क्या करूँ? अब तो उन्होंने अपने सम्बन्धो की बात भी स्वीकार कर ली है।

नेहा जब अपनी बात कह चुकी तो सास की प्रतिक्रिया जानने उनके चेहरे पर नजरें टिका दी पर ये क्या वहाँ तो कुछ भी न था, न आवेश, न क्रोध, उसने सोचा माँजी गुस्सा करेंगी, बाबूजी से कहकर फटकार लगावाएगी लेकिन बिल्कुल शान्त। नेहा को लगा, बेकार ही उसने ये सब कहा।

उसे क्रोध आ गया वह बोली माँजी आपको कुछ नहीं लगा ये सब सुनकर क्यों लगेगा आखिर आपको क्या पड़ी है? आप पर ऐसी गुजरती तो आप जान पाती मेरा दुःख ।

नेहा ने देखा माँजी की आँखों में तो गगा जमुना बरस रही है। घबरा गई थी वह माँजी आप तो रोने लगी, मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए, मुझे माफ कर दो माँजी मैने आपका दिल दुखाया। नहीं बेटी ऐसी बात नहीं है चौकी थी नेहा फिर क्या बात हो सकती है? रत्ना बोलने लगी मै अब तुमसे क्या छिपाऊ आज तक जो किसी से न कह सकी आज तुझसे कह रही हूँ। मुझे नहीं मालूम मुझे ऐसा करना चाहिए या नहीं तू कहती है जिस पर विपदा पड़ती है वही जान पाता है तो सुन ये पीड़ा मैने भोगी है ये पीड़ा क्या ? नेहा अवाक् रह गई थी क्या कह रही हैं माँजी आप? हाँ मै बिल्कुल ठीक कह रही हू, फर्क सिर्फ इतना है कि तू इस बात का विरोध कर सकी और मै चुपचाप जहर के घूँट पीती रही किससे कहती, कौन सुनता?

जहर पीकर भी मुस्कुराती रहती वो कमरे में होते थे उसके साथ और मै बाहर पहरा देती उनकी आबरू को सलामत रखने को बाहर बैठी अपने अरमानो की चिता जलाती। सास को दबे छिपे शब्दो में कहा

भी तो उनका तर्क था आदमी है जो जी चाहेगा करेगा तुझे क्या तू अपना काम कर, तुझे क्या कमी है रोटी, कपड़ा मिल रहा है। सोचती विरोध करके कहा कहा जाऊँगी? कौन रखेगा ? कहते है न औरत की डोली मायके से उठती है तो ससुराल से अर्थी ही बाहर जाती है, और विरोध करने की हिम्मत भी कहा थी।

नेहा को लगा जैसे उसका शरीर सुन्न पड़ रहा है, यह बात तो उसकी कल्पना के परे थी।

रत्ना ने कहा - बेटी, औरत तो सदियों से सहती आई है आदमी जुल्म करता आया है और औरत हर बार छली गई, तेरे साथ कोई नई बात नहीं हुई परन्तु मुझे खुशी है तुझमें विरोध करने की हिम्मत है मै आश्वस्त हूँ तू नहीं झुकेगी इस जग में तेरी विजय होगी और मै तेरे साथ हूँ।

नेहा को अपनी सास का मनोविज्ञान अचम्भित कर गया इतनी पढ़ी लिखी होने पर नेहा अपने को बौना महसूस करने लगी। आत्म विभोर हो रत्ना के पॉवों में गिर पड़ी माँजी उसे अपनी सच्ची दोस्त नजर आ रही थी। एक शक्ति जिससे उसको जीने की चाह जगी नेहा को गले लगा लिया था, रत्ना ने। दोनों ऐसे मिलीं मानों अपने दिलों का लावा पिघलाकर बहा देना चाहती हो।

नेहा अपने बर्ताव के कारण ग्लानि से भर उठी क्यो मैने अपनी देवी जैसी सास को पहचानने में भूल की क्यों उनकी हरदम उपेक्षा करती रही ? उनकी उपेक्षा कर मुझे सुख मिलता था। मै सोचती मेरी जीत है किन्तु यह मेरी भूल थी। इन कुछ क्षणों मे उसने अपनी विचारधारा का रूख ही बदल दिया था, अपना स्वय का विश्लेषण कर लिया जो आठ माह के वैवाहिक जीवन मे नहीं कर पाई थी।

दूसरे दिन नेहा सुबह जल्दी उठ माँजी के काम में हाथ बँटा रही थी दोनो खुश नजर आ रही थी। नेहा के श्वसुर यह देख सोचने लगे क्या कोई चमत्कार हो गया ?

ये रत्ना के सामने प्रश्नवाचक निगाहो से देख रहे थे मानो पूछ रहे हो ये क्या माजरा है ? उन्हें क्या पता ये शान्त दिखने वाला ज्वालामुखी अपने में कितना कुछ छिपाये बैठा है।

उजाले और भी

कनिका ने मन की बात जब अपने पति कौशल को बताई तो वह अवाक् रह गया। कनि तुम क्या कहा रही हो? तुम्हें क्या हो गया? तुम पागल तो नहीं हो गई? लोग क्या कहेंगे? समाज मे हमारी क्या इज्जत रह जायेगी, कौशल ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी, लेकिन कनि भी चुप नहीं रही बोलती रही हा कौशल मै जो कुछ कह रही हू पूरे होशों हवास मे कह रही हू, पागल तो अब तक थी और हा तुम्हें मेरी बात का समर्थन करना होगा कौशल। तुम कौनसे लोगों की, किस समाज की बात कह रहे हो? उसी की जिसने हमें यह त्रासदी दी कौशल के पास इन प्रश्नों का कोई जवाब नहीं था वह सोचने पर मजबूर हो गया, कनि ठीक ही तो कह रही है। फिर कुछ सोचते हुए बोला - पर कनि रूचि क्या चाहती है उससे बात हो चुकी है केवल तुम हा कह दो प्लीज कौशल मना मत करना इसी में हमारी व हमारी बेटी की भलाई है। कुछ देर चुप रहने के बाद कौशल बोला कनि मुझे तुम्हारे निर्णय पर पूरा भरोसा है, तुम जो भी करोगी सोच समझ कर ही करोगी गलती तो अब तक मैने की थी।

कौशल की स्वीकृति ने उसमें नया उत्साह भर दिया खुशी से आँखे छलक पड़ी मानो तपती रेत पर ठण्डी फुहारें गिरने लगी हो आज वह अपने को काफी हल्का अनुभव कर रही थी वरना उसे तो हसे भी महीनों बीत गये थे उसे ही क्या सभी तो एक दूसरे से कतराते अन्दर ही अन्दर घूटते जैसे-तैसे दिन निकाल रहे थे पुरानी यादों ने कनि को अपने घेरे में समेट लिया और उन्हीं में डूबने लगी।

वे कितने खुश थे जब रूचि का प्री मेडिकल टेस्ट में चयन हो गया था। उनका एक सपना साकार होने जा रहा था। डॉक्टरी के रूप में बेटी को देखने का घर मे कुछ कमी नहीं थी कनि स्वय भी नौकरी करती थी दोनो की कमाई से अच्छा काम चल रहा था। जब रूचि का मेडिकल का चौथा वर्ष चल रहा था तब रूचि को लेकर दोनों पति पत्नी में अतिरिक्त उत्साह था होता भी क्यों नहीं आखिर डॉक्टर लड़की थी

रिश्ते की चर्चा के दौरान उन्हे कुछ व्यग्य वाण भी सुनने को मिले थे अरे डाक्टरनी है, तुम क्यो उसके रिश्ते की चिन्ता करते हो वह तो अपने लिये स्वय लड़का ढूढ लायेगी तुम्हें पूछेगी थोड़े ही दिन रात इतने लड़कों के बीच रहती है क्या पता कोई चक्कर ही चल रहा हो ऐसी बातों ने उन्हें आहत कर दिया शका ने सिर उठाया हो सकता है ऐसा कुछ घट जाये? लेकिन पारिवारिक सुसस्कारों मे पत्नी, सादगी की प्रतिमूर्ति जिसमें कहीं भी ऐसा कुछ नहीं कि जिसके लिये शका की जाये माता पिता भी पूर्ण आश्वस्त थे कि उनकी बेटी कोई गलत कदम नहीं उठा सकती। फिर भी उन्हें कुछ सोचना पड़ा बेटी के मन की थाह पाने को एक बार कनि ने पूछा भी रूचि तुम्हारी नजर में कोई लड़का तो नहीं उसके पूछते ही रूचि मुस्करा दी, वाह मम्मी ये काम भी मुझे ही करना होगा फिर आप और डैडी किसलिये? ना बाबा मैं इन सब में पड़ने वाली नहीं इसे तो आप ही सम्भालों और आप मुझसे ज्यादा मेरा भला सोचोगे।

रूचि के जवाब ने दोनो को कितना सुखद अहसास करवाया दोनों को अपनी लाड़ली बेटी पर गर्व होने लगा। कुछ लड़के देखने पर एक सुन्दर स्मार्ट डॉक्टर लड़के का रिश्ता आया, कनि और कौशल को जैसे मनचाही मुराद मिल गई थी लेकिन वज्रपात उस समय हुआ जब लड़के वालों ने पूछा आप अपनी लड़की को क्या दोगे? आखिर हमारा लड़का डॉक्टर है हमने उस पर कितना खर्च किया है? अच्छा ऐसा करें आप एक क्लीनिक बनवा दीजिये दोनो साथ ही प्रेक्टिस करेंगे।

कनि हतप्रभ रह गई क्या उन्होने लड़की पर खर्च नहीं किया ? वे किससे खर्चा मागे और फिर बेटी कमाकर भी तो उनको ही देगी उसका सिर चकरा गया। बात वहीं खत्म हो गई कनि निराश हो गई लेकिन कौशल ने उसे हिम्मत बधाई अरे कनि सभी तो ऐसे नहीं होते तुम तो एक ही बार में निराश हो गई अरे हमारी बेटी मे कोई कमी है क्या देखना एक से बढ़कर एक रिश्ते

आयेगे इसके बाद तीन चार रिश्ते आए लेकिन सभी की कुछ न कुछ माग थी जैसे बिना माग के रिश्ता हो ही नहीं सकता। कोई पचास हजार केश मागते तो कोई पच्चीस तोला सोना तो कोई कार फ्रीज व रगीन टी वी तो अलग से। कौशल और कनि सोचते - क्या लड़की को डॉक्टर बना कर कोई भूल तो नहीं की ? कितनी मेहनत से लड़की को इस लायक बनाया उसका ऐसा प्रतिफल मिलेगा ऐसा तो नहीं सोचा था उनकी आशाओ पर पानी फिर गया डॉक्टर लड़की के लिये भी दहेज जैसी समस्या आयेगी इसकी तो कल्पना भी नहीं की थी उनको विश्वास हो गया कि विवाह के बाजार मे लड़की केवल लड़की है। उसका डॉक्टर वकील या उच्च शिक्षित होना कोई मायने नहीं रखता। अब तो कौशल भी हिम्मत हार गया आखिर कब तक हौसला रखता। अब तो कनि को हिम्मत बधाने के लिये भी कोई शब्द नहीं रहे थे। तभी एक प्रकाश की किरण दिखाई दी एक अच्छे परिवार का रिश्ता आया लड़का इन्जीनियर था परिवार के लोग भी अच्छे ही लगे थे। रिश्ता तय हो गया तो राहत की सास ली पर मन में सदा भय बना रहता कि कब कुछ माग कर बैठे इसी डर से जान बूझकर लेन-देन की बात नहीं उठाई सब कुछ भाग्य भरोसे छोड़ दिया सगाई की रस्म होने तक उनकी ओर से कोई बात नहीं सुनी तो राहत मिली अब वे इस ओर से सतुष्ट थे।

कुछ ही समय बाद उन्हें अपने लड़के का विवाह करना पड़ा पहला विवाह था, बहुत धूमधाम से हुआ विवाह कर जब बहू को घर ले आये तो उसी रात दुर्भाग्य से एक हादसा हो गया सभी थकान से चूर गहरी निद्रा में सो रहे थे कि घर में चोर घुस आये। गर्मी के दिन थे सभी छत पर सोये थे वह भी गहरी नींद किसी को पता भी न चला और बरसों की मेहनत से कमाया धन कुछ क्षणों में ले गये कनि के सभी जेवर चले गये साथ ही बेटी के लिये बनवाये कुछ गहनें भी कुछ हल्के फुल्के जेवर रह गये जो वे पहने थी इस घटना ने तो कनि और कौशल को तोड़ कर रख दिया एक दो दिन में ही एक-एक कर सभी मेहमान विदा हो गये। सभी ने ढाढस बन्धाया कहते है समय हर घाव को भर देता है धीरे-धीरे वे भी

सामान्य होने लगे कि एक पत्र ने उन्हे झिझोड़कर रख दिया ।
लड़की के ससुराल से पत्र आया था जिसका सार था "आपका सभी
कुछ तो चोरी हो गया, अव लड़की को क्या दोगे? हमने तो यह
सोचकर रिश्ता किया था कि दोनों कमा रहे है अच्छा खासा दहेज देंगे
हमें आपसे वहुत अपेक्षाएँ थी लेकिन अव आप शायद उतना
नहीं कर पायेंगे " हमने अपने लड़के का रिश्ता दूसरी जगह कर
दिया है। पत्र पढ़कर दोनों सकते में आ गये, दुनिया घूमती नजर आने
लगी, कनि ने तो रो रोकर अपना बुरा हाल वना लिया। खाना-पीना
छोड़ दिया ऑफिस जाना भी बन्द कर दिया कुछ ही दिनों में ऐसी
कमजोर सी दिखने लगी। वेटी का मन न दुखे इसलिये उसके सामने
वनावटी फीकी हसी हसने का प्रयास करती, लेकिन पीड़ा के भाव लाख
चाहने पर भी छिपा नहीं पाती दुखी तो रूचि भी वहुत थी उसको भी
वहुत बड़ा धक्का लगा फिर भी इस वात का सुकून था कि उन लोगों की
नियत का तो पता चल गया, वह अपनी माँ का हौसला वनाये रखती
और कहती माँ आपको तो खुश होना चाहिए कि आपकी वेटी ऐसे
लालचियों के चगुल से वच गई और माँ शादी हो जाती और बाद में वे
कोई माग करते तो ऐसे वातावरण में तो मै नहीं जी पाती पता
नहीं लोगों को पढ़ी-लिखी कमाऊ लड़की के सामने भी दहेज जैसी चीज
की इतनी अहमियत क्यो लगती है। माँ दुख तो मुझे भी है
लेकिन इसका नहीं कि रिश्ता टूट गया वल्कि इस वात का कि
मुझ में क्या कमी थी क्या इतना पढ़ लिख कर काविल वनने के
वाद भी मुझे दहेज के समकक्ष तोला गया? क्या मेरी शिक्षा का यही
मूल्य है? माँ बताओ ना आपको अपनी बेटी को पढ़ाने का ऐसा इनाम
मिला वड़े आये वेटे की पढ़ाई का खर्च मागने आप अपनी
बेटी की पढ़ाई का खर्च किससे मागोगी मुझे ऐसे सौदेवाजो के
यहा शादी नहीं करनी माँ मै आप पर वोझ हू ? वोलो ना माँ
मै कहीं नहीं जाऊगी नहीं करनी मुझे शादी नहीं चाहिए मुझे ऐसा
समाज ऐसी मान्यताएँ जहा वेटी और वेटी वालों को तिल-तिल
कर जलना पड़ता है कनि विस्मित होकर रूचि को ताक रही थी
सदा चुप रहने वाली फूल सी कोमल वेटी के जज्वात सुनकर कनि

दु:खी हो गई उसे तो अपना ही दु:ख बड़ा दिखाई दे रहा था पर बेटी की बातों से उसकी रूह काप गई वह कुछ बोलती कि बेल बज उठी रूचि ने दरवाजा खोला तो आश्चर्यचकित रह गई आठ दस कॉलेज के सहपाठी सामने खड़े थे तभी उसकी सहेली रोमा आगे आई रूचि तुम ठीक तो हो तुम्हें क्या हुआ रूचि? इतने दिन कॉलेज क्यूँ नहीं आई? तुम्हें मालूम है इन दिनों क्लास छोड़ने का कितना नुकसान होगा? रूचि एक साथ इतने सवालों का जवाब न दे सकी। सभी को अपनी माँ के पास ले आई। माँ की हालत देखकर सभी चौके आन्टी आपने अपनी क्या हालत बना ली हमें तो पता ही नहीं आप कब से बीमार है? कनि तो बेटी के दु:ख से भरी हुई थी ही उसके सब्र का बाँध टूट गया सहनशीलता चुक गई और मन में दबा ज्वालामुखी लावा बन कर निकलने लगा वह और कितना सह सकेगी न जाने किस प्रवाह में वह सभी के सामने अपनी व्यथा की परत दर परत खोलती गई। सब कह चुकी तो उसकी आँखें गगा जमुना बहा रही थी उसे खयाल आया अरे! मैने तो तुम्हें पानी का भी नहीं पूछा वह आँखे पोछती हुई रूचि को देखने लगी तो रूचि हाथ में चाय नाश्ते की ट्रे लेकर खड़ी थी वह न जाने कब वहा से चली गई थी कनिका ने देखा सभी लड़कियों की आँखे गीली थी और लड़के भी गमगीन हो गये थे लेकिन एक लड़का सबसे नजरे बचाकर आँखे पोछ रहा था उस पर कनि की नजर पड़ी तो उसने हसने का असफल प्रयास किया लेकिन हस न सका केवल इतना बोला आन्टी रूचि जैसी लड़की के साथ ऐसा हो सकता है? विश्वास नहीं होता ये पछताएँगे जिन्होंने ऐसे हीरे को ठुकरा दिया ।

कुछ दिनों बाद वही लड़का आकर कनि को इतना कुछ कह गया इतने दिन शायद कहने का साहस जुटा रहा था। उसकी स्पष्टवादिता व सहृदयता कनि को भा गई उसे यह अपना भावी दामाद नजर आने लगा उसके शब्द बार-बार कानों में गूजते मम्मी रुचि को छोड़ने वाला लड़का दुर्भाग्यशाली है इसकी कार्यकुशलता और व्यवहार के सभी कायल है मम्मी छोटे मुह बड़ी बात होगी

आप और सभी लोग चाहें तो मैं आपका यह बहुमूल्य हीरा मागता हू मैं आपकी जाति का नहीं हू फिर भी आप उचित समझें तो रूचि से भी पूछ लीजियेगा। अगले सप्ताह मेरे माता-पिता आ रहे है। मैने उन्हें सब कुछ लिख दिया था आप उनसे भी मिल लेना ये बातें सुयश ने बड़े ही विनम्र होकर सकोच से कही उसके चेहरे पर दृढ़ता के भाव थे और कई दिनों के बाद कनि अपने पति को यह बताने का साहस जुटा पाई थी जिसकी स्वीकृति पाकर वह बहुत खुश थी।

सम्बन्धों के पार

डॉ देव आ गये डॉ देव आ गये के स्वर से सभी खड़े हो गये वार्ड मे अफरा-तफरी मच गई थी। वो बहुत विचलित सा बड़ी मुश्किल से अपने को सम्भालता डॉ के पीछे भागा डॉक्टर साब डॉक्टर साब उसे बचा लेना उसे बचा लेना साब मेरा घर उजड़ जायेगा मेरे बच्चे अनाथ हो जायेंगे कहते-कहते रो पड़ा था वह उसकी आँखों में आँसू देख कुछ द्रवित हो गये थे डॉ देव उसके कन्धे पर हाथ रख सहानुभूति पूर्ण स्वर से उसे थोड़ी राहत मिली डॉ साब आप आप अभी जिसका ऑपरेशन करने जा रहे है वो वो मेरी पत्नी है कहते-कहते फिर सिसक उठा था वहीं पास मे दीवार के पास दो तीन बच्चे डरे सहमे से खड़े थे। उनकी आँखों के आँसू सूख चुके थे डॉ देव ने देखा उन मासूम की आँखें जैसे बहुत कुछ कह रही थीं अपनी माँ के जीवन की जैसी भीख माग रही हों डॉ देव उनके पास गये, उनके सिर पर हाथ रख बहुत ही स्नेहिल स्वर मे बोले बेटा तुम्हारी माँ अवश्य अच्छी हो जायेगी भगवान से प्रार्थना करो वे जल्दी अच्छी हो जाये पर उन्हे अपने ही स्वर खोखले लगने लगे

मैने भी तो भगवान से प्रार्थना की थी अच्छे से अच्छे सर्जन भी थे पर कोई बचा सका था मेरी गीतू को ? उनका मन कसैला हो गया था। अपने को सयत करते हुए एप्रिन पहन ऑपरेशन थियेटर की ओर बढ़ गये।

आज डॉ देव के हाथो मे मानो बिजली सी स्फूर्ति आ गई थी। वे बहुत ही बैचेन लग रहे थे उनकी ऑपरेशन करने की गति को देख एक बार तो सभी सहयोगी डॉक्टर डर गये थे आखिर आज डॉ देव को क्या हो गया है? पर उन्हें किसी का खयाल तक नहीं था वे तो बस जुटे थे दो घण्टे के ऑपरेशन में उन्होने आँख उठाकर भी किसी को नहीं देखा। ऑपरेशन सफल हुआ था सभी डॉक्टरो ने राहत की सास

ली उनके जाते ही डॉ श्रीवास्तव ने ठण्डी सास छोड़ते हुए कहा थैंक गॉड आज तूने लाज रख ली।

घर में घुसते ही बेटी ने सवाल किया पापा आप आज बहुत थके-थके लग रहे हो क्या बात है? तबियत तो ठीक है, नहीं बेटा कुछ नहीं अभी-अभी एक ऑपरेशन करके आ रहा हू पता है उस औरत की हालत बिल्कुल तुम्हारी मम्मी की तरह थी भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि मेरे हाथों ऑपरेशन सफल रहा।

सुनते ही स्वाति की आँखे भर आई पापा काश मेरी मम्मी का ऑपरेशन भी आगे नहीं बोल पाई वह पानी लाने के बहाने अन्दर चली गई, वह नहीं चाहती कि पापा के सामने वह कमजोर पड़े।

पत्नी का जिक्र आते ही डॉ देव फिर उदास हो गये, सामने लगे गीतू के फोटो पर निगाहें ठहर गई हे भगवान मेरी गीतु को मुझसे क्यू छिन लिया मैने तेरा क्या बिगाड़ा था क्यू मुझे बीच मझधार में अकेला छोड़ दिया ? कितनी भोली थी दया इतनी कि किसी का दु:ख देख नहीं पाती, घर आने वाले पेशेन्टस् से कितना प्रेम से मिलती कि वे अपना आधा दु:ख तो वहीं भूल जाते हर किसी की सेवा को तत्पर रहती डॉ की पत्नी होने का अहम् तो छू तक नहीं गया था। रात को फोन आने पर मै जाना नहीं चाहता, नींद का बहाना करता पर वो थी कि भेज कर ही दम लेती। कभी रात की नींद खराब होने का रोना नहीं रोती - कहती नींद का क्या सुबह देर से उठ जाना किसी की जिन्दगी से बढ़कर हमारी नींद तो नहीं है किसी ने सच ही कहा है अच्छे लोगों की चाह भगवान के घर में भी है वह न जाने कितनी देर और खयालों में ही खोये रहते यदि डाकिया न आता।

बड़े भाई साहब का पत्र था उनके पास लोग डॉ देव के पुनर्विवाह हेतु रिश्तों के लिये चक्कर काट रहे थे। भाई साहब ने एक बार घर आकर मिलने को लिखा ताकि कोई पसन्द का रिश्ता तय किया जा सके

विखरी गृहस्थी को फिर से सवारने, वच्चो की परवरिश व अन्य कारणो का वास्ता देकर पुनर्विवाह के लिये जोर दिया था, वे ये कार्य सम्पन्न करवा अपने कर्तव्य की इतिश्री करना चाहते थे।

डॉ देव का मन कसैला हो गया, सोचने लगे इस दुनिया का भी अजव दस्तूर है कोई इन्सान पास रहता है तो याद रहता है और नजरों से दूर हुआ नहीं कि सव कुछ खतम हो जाता है । अपने जीवन साथी को जो इतने वर्षों साथ रही हर सुख दु'ख में मेरा साथ दिया उसे इतनी जल्दी कैसे भुला जा सकता है। सभी को लग रहा है वस विवाह कर लो। किसी को मेरी भावनाओं की परवाह नहीं, फिर वच्चों का क्या होगा? वड़े होते वच्चे क्या ये सव स्वीकार कर पायेंगे? क्या आने वाली को मै पत्नी का दर्जा और सच्चा प्यार दे पाऊगा? वच्चो के सामने नई पत्नी का साथ कैसा लगेगा? क्या वे उसे झेल पायेंगे नहीं नहीं ये कैसे हो सकता है? अजीव उलझन मे फस गये थे डॉ देव।

उनकी वेटी की आवाज ने उन्हें इस झझावत से वाहर निकाला वो पूछ रही थी पापा किसकी चिटठी है? उन्होंने चुपचाप पत्र वेटी के हाथ में दे दिया वे उससे नजरें नहीं मिला सके पेशेन्ट देखने का वहाना कर अस्पताल की ओर वढ़ गये।

पत्र पढ़ते-पढ़ते स्वाति की आँखें भीग गई तभी उसकी वहन सपना और भाई पलक भी आ गये स्वाति के हाथ से लगभग छिनते हुए पत्र लिया पढ़ते ही पलक चीख उठा नहीं नहीं ये नहीं हो सकता ऐसा कभी नहीं हो सकता सपना भी सुवक उठी दीदी आप हमें छोड़कर नहीं जाना पलक वोला दीदी तुम ससुराल चली जाओगी तो हम क्या करेंगे? स्वाति ने दोनों को गले लगा लिया था।

स्वाति सोचने लगी आज नहीं तो कल मुझे जाना ही पड़ेगा आखिर विवाहित वेटी कितने दिन मायके मे रह सकती है कव तक पिता के गम मे साथ दे पाऊँगी कल ही श्वसुरजी का फोन आया था कि कव

लेने भेजू सही भी है आज उसे पूरे तीन महीने हो गये थे अक्षत् भी कितने अच्छे है जो मेरी बात मानकर मुझे छोड़ गये।

आज मम्मी को गुजरे पूरे तीन महीने हो गये थे, हर वक्त गम की परछाइयो में डूबे जैसे हसना ही भूल गये थे। कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा दिन भी देखना पड़ेगा। अभी तक तो स्वाति ने सभी को सम्भाल लिया था। सभी कुछ सामान्य होने लगे थे अब स्वाति को चिन्ता होने लगी थी इस घर का क्या होगा? पापा तो मम्मी की याद भुलाने को हरदम काम में डूबे रहते है पर इन दोनों का क्या होगा?

स्वाति और न जाने क्या-क्या सोचती कि पलक बोल उठा दीदी आप पापा से कहना वो दूसरी औरत को नहीं आने दे मैं उसके साथ नहीं रहूगा मैं भाग जाऊगा तभी सपना भी बोली दीदी क्या वो दूसरी औरत हमारे घर मे ही रहेगी? हमारी मम्मी की सभी चीजें काम में लेगी। क्या ये सारी चीजें उसकी हो जायेगी? ये कपड़े, गहने क्या वो पापा के साथ मम्मी की तरह ही रहेगी स्वाति अवाक् रह गई एक बार तो अपने भाई की बुद्धि पर ठगी रह गई। एक दस वर्षीय बालक की ऐसी सोच इतने ढेर सारे सवालों का वो क्या जवाब देगी ? कितनी गहराई मे चला गया था ये मासूम मैंने तो ऐसा सोचा ही नहीं कल्पना मात्र से ही काप उठी थी वह उसका भी अन्तर्मन चित्कार कर उठा । नहीं नहीं ऐसा नहीं होगा नहीं होगा।

उसने चारो ओर निगाह डाली क्या नहीं था इस घर में हर आधुनिक सुख सुविधा का सामान मौजूद था एक से बढ़कर एक सुन्दर साड़ियाँ नये-नये गहने सुसज्जित व्यवस्थित घर कमी थी तो बस इन्हें सम्भालने वाली की हे भगवान! अब क्या होगा?

उसने सोचा अब इन मासूमों को कैसे समझाऊ कि पति-पत्नी का रिश्ता कैसा होता है? बिना जीवन साथी के ये जीवन कितना बेमानी होता है वह भी विवाहित थी और पति-पत्नी के रिश्तों का मूल्य समझती थी पर इन्हें कैसे समझाये? अजीब उलझन मे फस गई थी।

बिखरी गृहस्थी को फिर से सवारने बच्चों की परवरिश व अन्य कारणों का वास्ता देकर पुनर्विवाह के लिये जोर दिया था वे ये कार्य सम्पन्न करवा अपने कर्तव्य की इतिश्री करना चाहते थे।

डॉ देव का मन कसैला हो गया, सोचने लगे इस दुनिया का भी अजब दस्तूर है, कोई इन्सान पास रहता है तो याद रहता है और नजरों से दूर हुआ नहीं कि सब कुछ खतम हो जाता है । अपने जीवन साथी को जो इतने वर्षों साथ रही हर सुख दु ख में मेरा साथ दिया उसे इतनी जल्दी कैसे भुला जा सकता है। सभी को लग रहा है बस विवाह कर लो। किसी को मेरी भावनाओं की परवाह नहीं फिर बच्चों का क्या होगा? बड़े होते बच्चे क्या ये सब स्वीकार कर पायेंगे? क्या आने वाली को मै पत्नी का दर्जा और सच्चा प्यार दे पाऊगा? बच्चों के सामने नई पत्नी का साथ कैसा लगेगा? क्या वे उसे झेल पायेंगे नहीं नहीं ये कैसे हो सकता है? अजीब उलझन में फस गये थे डॉ देव।

उनकी बेटी की आवाज ने उन्हें इस झझावत से बाहर निकाला वो पूछ रही थी पापा किसकी चिट्ठी है? उन्होंने चुपचाप पत्र बेटी के हाथ में दे दिया, वे उससे नजरें नहीं मिला सके पेशेन्ट देखने का बहाना कर अस्पताल की ओर बढ़ गये।

पत्र पढ़ते-पढ़ते स्वाति की आँखें भीग गई तभी उसकी बहन सपना और भाई पलक भी आ गये स्वाति के हाथ से लगभग छिनते हुए पत्र लिया पढ़ते ही पलक चीख उठा नहीं नहीं ये नहीं हो सकता ऐसा कभी नहीं हो सकता सपना भी सुबक उठी दीदी आप हमें छोड़कर नहीं जाना, पलक बोला दीदी तुम ससुराल चली जाओगी तो हम क्या करेगे? स्वाति ने दोनों को गले लगा लिया था।

स्वाति सोचने लगी आज नहीं तो कल मुझे जाना ही पड़ेगा आखिर विवाहित बेटी कितने दिन मायके मे रह सकती है कब तक पिता के गम मे साथ दे पाऊँगी कल ही श्वसुरजी का फोन आया था कि कब

लेने भेजू सही भी है आज उसे पूरे तीन महीने हो गये थे अक्षत् भी कितने अच्छे है जो मेरी बात मानकर मुझे छोड़ गये।

आज मम्मी को गुजरे पूरे तीन महीने हो गये थे, हर वक्त गम की परछाइयों में डूबे जैसे हसना ही भूल गये थे। कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा दिन भी देखना पड़ेगा। अभी तक तो स्वाति ने सभी को सम्भाल लिया था। सभी कुछ सामान्य होने लगे थे अब स्वाति को चिन्ता होने लगी थी इस घर का क्या होगा? पापा तो मम्मी की याद भुलाने को हरदम काम मे डूबे रहते है पर इन दोनों का क्या होगा?

स्वाति और न जाने क्या-क्या सोचती कि पलक बोल उठा दीदी आप पापा से कहना वो दूसरी औरत को नहीं आने दे मैं उसके साथ नहीं रहूगा मै भाग जाऊगा तभी सपना भी बोली दीदी क्या वो दूसरी औरत हमारे घर मे ही रहेगी? हमारी मम्मी की सभी चीजें काम में लेगी। क्या ये सारी चीजें उसकी हो जायेगी? ये कपड़े, गहने क्या वो पापा के साथ मम्मी की तरह ही रहेगी स्वाति अवाक् रह गई एक बार तो अपने भाई की बुद्धि पर ठगी रह गई। एक दस वर्षीय बालक की ऐसी सोच इतने ढेर सारे सवालों का वो क्या जवाब देगी ? कितनी गहराई में चला गया था ये मासूम मैने तो ऐसा सोचा ही नहीं कल्पना मात्र से ही काप उठी थी वह उसका भी अन्तर्मन चित्कार कर उठा । नहीं नहीं ऐसा नहीं होगा नहीं होगा।

उसने चारो ओर निगाह डाली क्या नहीं था इस घर में हर आधुनिक सुख सुविधा का सामान मौजूद था एक से बढ़कर एक सुन्दर साड़ियाँ, नये-नये गहने, सुसज्जित व्यवस्थित घर कमी थी तो बस इन्हें सम्भालने वाली की, हे भगवान! अब क्या होगा?

उसने सोचा अब इन मासूमों को कैसे समझाऊ कि पति-पत्नी का रिश्ता कैसा होता है? बिना जीवन साथी के ये जीवन कितना बेमानी होता है वह भी विवाहित्त थी और पति-पत्नी के रिश्तो का मूल्य समझती थी पर इन्हें कैसे समझाये? अजीब उलझन में फस गई थी।

एक तरफ पिताजी की मनोदशा, उनका अकेलापन दूसरी तरफ ये दोनो सोच सोचकर उसका कलेजा मुह को आने लगा।

स्वाति को स्वय पर आश्चर्य हुआ कि इन तीन महीनों में ही वह कितनी परिपक्व हो गई थी कितना कुछ सोचने समझने लगी थी? जबकि मम्मी उसे बिल्कुल बुद्धू समझती थी किस तरह इस गृहस्थी का बोझ उसने उठा लिया था पर कब तक? आखिर कब तक ये सब चल पायेगा? बिना औरत के घर कैसे चलेगा? मुझे ही कुछ करना पड़ेगा पर क्या करू ?

बहुत सोच विचारने पर उसने निर्णय लिया मुझे अपने भाई-बहनों को समझाना होगा, इनके मन में ये बिठाना होगा कि बिना औरत के गृहस्थी नहीं चल सकेगी उन्हे बताना होगा भविष्य में आने वाली कठिनाइयाँ जवान होती सपना की जिम्मेदारी, पलक की पढ़ाई रोजमर्रा की जरूरतें पापा की मजबूरी और उनको भी तो माँ का साया चाहिये हा यही ठीक होगा ।

अपने निर्णय से स्वाति को सन्तोष मिला उसने सपना को पास वाले क्वार्टर में भेज दिया ताकि सहेली के साथ जी हल्का कर ले पलक को देखा जो सो चुका था उसे उस पर बहुत प्यार आया। अपने निर्णय से उसमे एक आत्म विश्वास जगा, उसे लगा जिन्दगी किसी के बिना रूकी नहीं है, चल रही है और चलती रहेगी। समय के मरहम से ये घाव भी भर जायेगे। आखिर समझौता तो करना ही होगा।

एक अन्तहीन दास्तान

पूजा के कहे शब्द माँ मुझे वहा मत भेजो मत भेजो माँ ये लोग मुझे मार डालेंगे, मै मर जाऊगी बार-बार कान में गूजने लगे पूजा की मा आखें फाड़े उस कागज के टुकड़े को घूरे जा रही थी, जो अभी अभी डाकिया दे गया था। वह सूखे पत्ते सी काप रही थी, उसकी आखों के आगे अन्धेरा छाने लगा, उसे अतीत अपने सामने घूमता नजर आने लगा।

पूजा जब घर में चारों तरफ खिलखिलाती दौड़ती तो जैसे सारा घर सर पर उठा लेती तीन भाइयाँ की इकलौती बहन होने से सभी की लाड़ली थी वह यौवन की दहलीज पर पैर रख चुकी थी परन्तु उसका बचपना नहीं गया था। पिता को रिश्ते की चिन्ता सताने लगी, माँ कहती मेरी बेटी तो हीरा है हीरा उसे ऐसे घर में दूगी जहा ये राज करेगी, आखिर क्या कमी है मेरी बेटी में?

और सचमुच एक दिन एक बहुत ही अच्छा रिश्ता आया, लड़का सुन्दर राजकुमार सा, अच्छी नौकरी अच्छा खाता पीता घर था। एक ही लड़का था लेकिन सभी सामान के अलावा पचास हजार कैश की माग थी पैसों के कारण पूजा के पिता थोड़ा डगमगाये किन्तु मा की जिद के आगे झुक गये। वह तो बस लड़के के रूप पर मोहित हो गयी । ज्यादा कुछ खोज बिन किये बिना रिश्ता पक्का कर दिया। बहुत धूमधाम से अपनी हैसियत से बढ़कर खर्च किया था ताकि उनकी लाड़ली सुखी रहे।

विवाह के बाद जब पहली बार पूजा वापस घर आई तो बहुत खुश थी बेटी की खुशी के आगे मा बाप अपने को धन्य समझ रहे थे। हसी खुशी में एक सप्ताह कैसे गुजर गया पता ही न चला अविनाश के आने का समाचार मिला तो पूजा को जैसे कुछ याद आया वह उदास हो गई सभी से मिलने की खुशी मे वह तो जैसे भूल ही गई थी या यो कहें वह चाहकर भी बता नहीं पाई थी। पूजा की उदासी देख जब मा ने कारण

जानना चाहा तो अवाक् रह गई। पिता पर मानो वज्रपात हुआ वे अभी विवाह के खर्च से उवर भी नहीं पाये थे कि उनके पावो तले से जमीन खिसक गई। उन्होंने पूजा को समझा कर विदा किया कि कुछ दिनो मे वे बन्दोवस्त कर स्कूटर भेज देगे। पूजा पिता की हालत समझ रही थी वह दु खी मन से विदा हुई। स्कूटर न मिलने से अविनाश उसे पूरे रास्ते खरी-खोटी सुनाता रहा पूजा को अविनाश से ऐसी उम्मीद नहीं थी उसे अविनाश के प्यार में खोट दिखने लगा। उसके प्यार का महल रेत का सावित हुआ जो ढह गया। और घर पहुचने पर जो उसे सुनने को मिला तो उसका कलेजा मुह को आ गया।

सास श्वसुर के तानो ने उसे छलनी कर दिया। कैसे कगालों से नाता जोड़ा है, हमने सोचा इकलौती लड़की है, अच्छा दहेज मिलेगा। लेकिन क्या टी वी तक रगीन नहीं दे सके हमारी तो इज्जत ही मिट्टी मे मिला दी। उसे सब कुछ घूमता नजर आया उस दिन वह बहुत रोई और अपने आपको कमरे में कैद रखा लेकिन आश्चर्य? कोई उसे पूछने तक नहीं आया, यहा तक कि अविनाश भी नहीं? भूख से उसे चक्कर आने लगे। नाजों से पली पूजा को आज पहली बार दु ख का अहसास हुआ था।

पूजा का पत्र पाकर उसके पिता परेशान हो उठे। उन्होंने कहीं से कर्ज लिया और स्कूटर भेज दिया। लेकिन वहा किसी को कोई फर्क नहीं पड़ा पूजा दिन रात काम में खटती सास ननद के तानें सुनती एक जिन्दा लाश बन गई थी। देर रात तक वह अविनाश का इन्तजार करती, उसे केवल उसी का सहारा दिखाई देता। लेकिन वो भी स्वार्थी निकला रात देर से आना गाली गलौज करना उसकी आदत बन गई थी।

इतना सब सहते हुए भी पूजा पिता को पत्र में हमेशा यही जाहिर करती कि यह बहुत खुश है। यह नहीं चाहती कि उसके कारण उसके माता पिता दु खी हो।

एक दिन जब वह दोपहर को अपने कमरे में आई तो साथ ही सास

व ननद आ गई, उसके सारे बक्सों की तलाशी ली, उसकी बहुत सी कीमती साड़िया, कुछ जेवर और अन्य कीमती सामान ले गई जो उसे विवाह में दहेज में मिले थे। लेकिन पूजा को इसका कोई गम नहीं था वह तो इसी में सतोष कर गई कि चलो पिता के घर से नहीं भगाया।

इतने पर उन लोगों को सतोष न था। पता नहीं उनके मन में क्या था? ये किस जनम का बदला उस मासूम से ले रहे थे? एक दिन तो हद हो गई। वह अविनाश का इन्तजार करते थक कर सो गई, रात को बारह बजे वह 'धूत' होकर आया तो पूजा को झझोड़ कर जगा दिया, पूजा उसके रोद्र रूप को देख कर काप गई। वह कहने लगा कल अपने बाप के घर जाकर पच्चीस हजार रूपये लेकर आना नहीं तो तेरा जीना हराम कर दूगा। पूजा चीख पड़ी नहीं अब वह कुछ नहीं लायेगी। चाहे मुझे जान से मार डालो। पहली बार उसमें विरोध करने का साहस आ गया था। इतना सुनते ही अविनाश उस पर टूट पड़ा उसे लातों और घूसों से मारने लगा, चीख पुकार सुन सभी वहा आ गये, लेकिन किसी ने भी उसे छुड़वाने की कोशिश नहीं की, उल्टा उसे ही दोष देने लगे।

बैठक से खुसुर-फुसुर की आवाजें कानों में पड़ी तो निढाल पड़ी पूजा किसी तरह उठकर गई और दीवार की ओट से सुनने की कोशिश करने लगी। अपनी ही बातें होते देख उसके रोम-रोम जैसे कान बन गये। उन बातों का सार था कि एक बार पूजा से और पैसे मगवा लें, और आने पर उसका काम तमाम कर देंगे। पूजा सन्न रह गई जैसे किसी ने शरीर का सारा खून ही निकाल लिया हो। दूसरे दिन सब कुछ सामान्य हो गया जैसे रात कुछ हुआ ही न हो। आज सास स्वय चाय लेकर उसके कमरे में आई और ऐसा जताने लगी जैसे उसे रात वाली घटना का बहुत दु:ख है। यह परिवर्तन देख पूजा चकराई लेकिन रात वाली योजना का ध्यान आते ही वह काप गई किन्तु वह सामान्य बनी रही।

चाय के बाद सास ने बड़े प्यार से समझाया, बेटी एक बार तू और पैसे ले आ फिर कभी कुछ न कहेंगे तुम जानती हो रीता के ससुराल वालों ने पचास हजार रूपये मागे हैं। कुछ तू लायेगी तो थोड़ी मदद मिल

जायेगी। इस बार पूजा की सहन शक्ति जवाब दे गई उसने रणचण्डी का रूप धर लिया और न जाने वह गुस्से में क्या क्या बक गई पर आश्चर्य सास ने एक भी शब्द नहीं कहा और प्यार से उसे मायके भेज दिया।

अचानक पूजा को आया देख सभी का माथा ठनका। उसकी हालत देख सभी हैरान थे। वह हड्डियों का ढाँचा लग रही थी रूप लावण्य न जाने कहा खो गया। उसकी कठोर मुख-मुद्रा देख कर तो माता-पिता सिहर उठे। उन्हें एक भयानक तूफान आने का अन्देशा हो गया। मा से गले मिलने पर उसके सब्र का बाध टूट गया वह बिलख पड़ी। बहुत रो चुकी तो उसने वापस ससुराल न जाने का फैसला सुना दिया। सभी हैरान थे लेकिन इस समय चुप रहना ही उचित समझा।

अविनाश लेने आया तो जैसे तूफान आ गया उसने साफ इन्कार कर दिया घर वाले समझाने लगे, सामाजिक मान्यताएँ आड़े आ गई बेटी तो अपने घर ही शोभा देती है यहा रखेंगे तो लोग क्या कहेंगे हमारी इज्जत का सवाल है। और बेटी को तो अपने पति के घर ही रह कर सुख-दु:ख भुगतना पड़ता है। इधर घर की स्थिति भी बदल गई थी पिता रिटायर्ड हो गये भाइयों ने शादी कर अपनी अलग गृहस्थी बसा ली थी और पैसा देने की बात पर सभी अपने खर्चों का रोना ले बैठे। सभी पूजा को भेजने के ही पक्ष में थे। पूजा फट पड़ी हा हा मैं यहा रहूँगी तो तुम पर बोझ बन जाऊँगी मेरा खर्चा तुम पर भारी पड़ेगा भगवान ने मुझे बेटी क्यों बनाया? क्यों मुझे पराधीन बनाया ?

आखिर में एक मा का सहारा नजर आया उसे आशा की किरण दिखाई दी वह मा से विनती करने लगी मा मुझे मत भेजो मा वे लोग मुझे मार डालेंगे मा मै तुम पर बोझ नहीं बनूँगी कोई नौकरी कर लूँगी मा बस एक बार रोक लो बस मा एक बार । लेकिन माँ की जुबान तो जैसे तालू से चिपक गई थी।

बेटी के बोल से कलेजा छलनी हो रहा था एक बार तो

विचलित हो कहने को हुई आ बेटी आ पर अगले ही क्षण शब्द गले में ही अटक कर रह गये सामाजिक मान्यताओं ने जकड़ लिया लोग क्या कहेंगे बेटी तो ससुराल में ही अच्छी लगती है धीरे से टूटे-फूटे स्वर निकले, जा बेटी जा तेरे भाग्य मे लिखा है वो तुझे भुगतना ही होगा। बेटी, पीहर से बेटी की डोली निकलती है अर्थी तो ससुराल से आगे नहीं बोल पाई थी वह गिरने लगी तो पास खड़े बेटे ने सहारा दे पकड़ लिया ।

एक क्षण पूजा के दिमाग में बिजली कौंधी क्यू बेकार ही इन सब के आगे दया की भीख मागती है? क्रोध में उसका चेहरा लाल हो गया आसू पोंछ डाले मुह पर कठोरता आ गई अपने आप को भाग्य भरोसे छोड़ पूजा चली गयी।

और आज एक कागज का टुकड़ा ये सन्देश दे गया था कि पूजा नहीं रही दबे छिपे शब्दों मे सुनने में आया कि उसे जलाया गया ये तो ईश्वर जाने वह हत्या थी या आत्महत्या ? मा बिलख उठी उसके मुह से निकला काश मै पूजा की बात मान लेती ।

अनकही व्यथा

झवरी फिर से माँ वनने वाली थी, जैसे-जैसे समय नजदीक आ रहा था वह चिन्ता के सागर में डूवती जा रही थी। हे ईश्वर इस वार मुझे बेटी ही देना, वरना मै फिर सन्तान सुख से वचित कर दी जाऊँगी। कैसी विडम्बना है? आज तीन वच्चों को जन्म देने के वाद भी मातृत्व सुख से वचित हू? झवरी सोचने लगी कैसा विधि का विधान है हम पुत्र सुख का सपना भी नहीं देख सकती, न जाने हमे किस पाप का फल भुगतना पड़ रहा है। मालकिन की आवाज से उसकी तन्द्रा भग हुई। वह कह रही थी हे भगवान! इस वार तो पोता ही देना मै सोना चान्दी का छत्र चढाऊगी सवा मन का प्रसाद चढाऊगी और न जाने क्या-क्या वोलती रही झवरी को मन ही मन हसी आ गई कहा तो हमें पुत्र प्राप्ति पर पीड़ा होती है, वहीं ये मानव पुत्र प्राप्ति को ही अपना सौभाग्य मानते है। काश ? कोई हमारी पीड़ा को भी समझ पाता।

आखिर एक दिन झवरी ने एक खूबसूरत बच्चे को जन्म दिया तो मालकिन खिल उठी। बहू, देख तो कैसा शुभ शगुन हुआ है। अपनी झवरी के बच्चा हुआ है। अव तो हमारे घर भी लड़का ही होगा। बहू ने ठण्डी नि श्वास छोड़ी उसकी आँखों में असीम वेदना उतर आई थी। तीन लड़कियों के वाद लड़के की कामना प्रबल होने लगी थी। वह सूनी-सूनी आँखो से झवरी के वच्चे को निहारने लगी उसे हाथ में उठा लिया उसके होठ बुदबुदा उठे झवरी तू कितनी खुशनसीब है। लेकिन वो झवरी की पीड़ा को कहा समझ पाई थी?

झवरी एक कोने मे दुवकी अपने दुर्भाग्य पर आँसू वहा रही थी। लेकिन उसकी ओर किसी का भी ध्यान नहीं था। उसके गम में शरीक होने वाला भी तो कोई नहीं था। वह अपनी व्यथा कहे भी तो किससे? तभी छमिया आ गई। वह अभी अभी चरागाह से लौटी थी। उसने झवरी के पास प्यारा सा छोना देखा तो खुशी से उछल पड़ी लेकिन झवरी की ऑखो में ऑसू देख असमजस में पड़ गई। उसे झवरी के इस तरह रोने का कारण समझ मे नहीं आ रहा था। उसने बहुत वार पूछा पर झवरी

कुछ बताने को तैयार ही नहीं थी, छमिया ने उसको हसाने का बहुत प्रयास किया पर सभी व्यर्थ। अब तो छमिया को भी गुस्सा आ गया। जा मैं तुझसे नहीं बोलती और पैर पटकती हुई जाने को मुड़ी कि झबरी बोली छमिया क्यों जिद करती हो, तुम नहीं समझोगी कि उसका वाक्य पूरा भी नहीं हुआ कि छमिया ने रूठते हुए कहा, मै क्या इतनी छोटी हूँ जो कोई बात समझ नहीं पाती? अच्छा बाबा नाराज मत हो

झबरी ने अपने बच्चे की ओर इशारा कर कहा इसे देख रही है न मेरा यह जिगर का टुकड़ा न जाने कब किन क्रूर हाथों बलि चढ़ा दिया जायेगा? सिसक पड़ी थी झबरी फिर फिर लोग इसे चटखारे लेकर खायेंगे। खाते समय किसी को यह खयाल नहीं आयेगा कि यह भी किसी माँ का लाल था? किसी के कलेजे का टुकड़ा ।

इतना सुनना था कि छमिया की आखे भी बरसने लगी। अभी तक उछल कूद करती चचल छमिया एकदम गम्भीर बन गई। अब उसके सोचने की बारी थी। वह भी तो मा बनने वाली थी पहली बार मातृत्व सुख की कल्पना में ही वह दिन रात डूबी रहती थी, क्या होगा और क्या होना चाहिए, इस ओर तो उसका कभी ध्यान ही नहीं गया। लेकिन झबरी की बातों ने उसे विचलित कर दिया। यदि मेरे भी बेटा हुआ तो ? वह कल्पना मात्र से ही काप उठी उसका रोम-रोम आशकित हो गया। ये लोग मेरे कलेजे के टुकड़े को भी कहा छोड़ेंगे ? उसे भी हल में जोत देंगे जहा दिन रात गर्मी सर्दी वर्षा सहते हुए काम करना पड़ेगा या किसी तेली की घाणी से जोड़ दिया जायेगा जहा दिन-रात आँखों पर पट्टा चढ़ाए घूमता रहेगा या फिर किसी बैलगाड़ी में जुतकर बोझा ढोएगा इस कल्पना से वह सिहर उठी। कुछ देर पहले वो जिस बात से आनन्दित हो रही थी वही बात अब उसे भयभीत कर रही थी। अब वह अपने लिये एक बेटी की कामना करने लगी ताकि लोग उसे गऊ माता का सम्मान तो देंगे। झबरी और छमिया दोनों ही अपने अपने गम में डुबी थी वे अपनी पीड़ा कहें भी तो किससे कैसे ? दोनो बेजुबान जानवर जो ठहरी।